चन्दामामा
दीवाली विशेषांक
6 as

Photo by A. L. Syed

पुरस्कृत परिचयोक्ति

क्षितिज की ओर

प्रेषक
ठाकुर जयराजसिंह—जबलपूर

शीघ्र ही आएगा
ए वी एम चित्र
लड़की
निर्देशन
एम.वी. रामन
AVM
PRODUCTIONS
कथा
संवाद-गीत
संगीत
आर. वेंकटाचलम • राजेन्दर कृष्ण • धनीराम • सुदर्शनम

चन्दामामा

विषय-सूची

इनके अलावा फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता, मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर चित्र और कई प्रकार के तमाशे हैं।

अल्यूमीनियम के बक्से

सब तरह के उपयोग के लिए
हल्के मजबूत तथा आकर्षक

विद्यार्थियों का बक्सा
आकर 12"×9×"3 दाम 9-0-0

सर्वश्रेष्ठता

पान बक्सा
आकर 7"×4×"×1½"
दाम 3-0-0

का चिह्न

टाईलेट बक्सा
7"×5½"×1½×"
दाम 8-0-0

जवनलाल (1929) लिमिटेड

अल्यूमीनियम के हर तरह के बरतन और सामान बनाने वाले
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, राजमन्द्री, अदन, दिल्ली और रंगून

बचपन से ही दांत साफ़ करने का अभ्यास कराना माता-पिता का प्रमुख कर्तव्य होना चाहिये। बच्चों के छोटी अवस्था का यह अभ्यास दिनचर्या का विषय बन जाता है व थोड़ी सावधानी रखने से जीवन भर दांत के व्याधियों से छुटकारा मिल जाता है—

दि कैलकटा केमिकल कं. लि. २५, पंडितिया रोड, कलकत्ता-२९.

माँ-बेटा

किसी समय मालव देश पर वीरसिंह नाम का राजा राज करता था। उसकी रानी जयमदा बड़ी पतिव्रता थी। उस राजा के राज में शांति विराजती थी। लोग सुखी और संपन्न थे। लेकिन राजा-रानी को एक चिंता थी। उनके कोई संतान नहीं थी। उन्होंने कितने ही दान-पुण्य किए। लेकिन कोई लाभ न हुआ। एक बार उस राजा के दरबार में एक महात्मा पधारे। उन्होंने राजा का चिंताग्रस्त वदन देखा और कहा—'राजन्! मैंने तुम्हारी चिंता का कारण जान लिया। हताश न हो। मैं तुम्हारा दुख दूर करूँगा।' यह कह कर उसने अपनी झोली से कोई जड़ी-बूटी निकाल कर राजा को दी और कहा—'यह जड़ी एक लोटे में डाल कर वह पानी रानी को पिलाओ।' फिर महात्मा चले गए। राजा ने महात्मा के कथनानुसार किया। दूसरे साल रानीके चाँद सा लड़का पैदा हुआ। यह बहुत दिन पहले की कहानी है। आज वैसे महात्मा नहीं हैं। लेकिन विज्ञान के प्रभाव से वैसे औषध आज भी मिलते हैं। नारियों को मातृत्व का वर देने के लिए 'लोध्रा' वैसा ही एक औषध है।

केसरी कुटीरम लिमिटेड : रायपेठ, मद्रास-१४
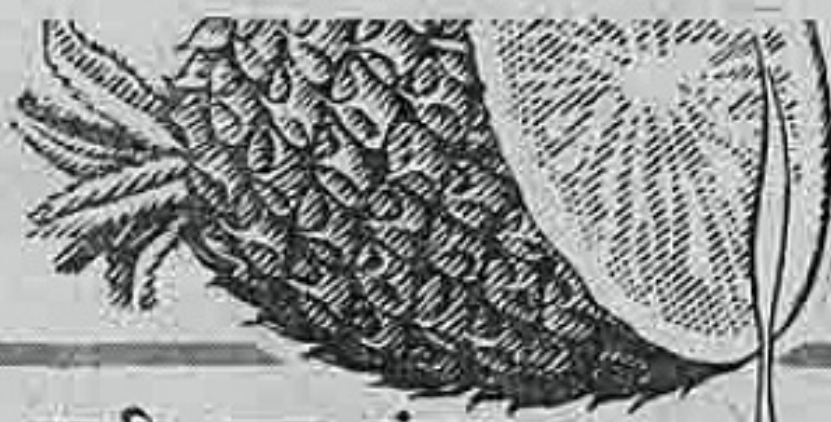
वीर-बच्चा
बच्चों की ताकत के लिये
अनुपम टानिक

बिड़ला लेबोरेटरीज़, कलकत्ता २०

मनोहर सुगंध के लिये . . .

मैसूर बाथ ट्याबलेट्स

मल्लिका की उत्कृष्ट सुवासना सदृश
कोमलता से सुगंधयुक्त की हुई ।

सुप्रसिद्ध **मैसूर सांडल सोप** वालों की तैयारी।

हर जगह मिलता है।

गवर्नमेंट सोप फ्याक्टरी, बैंगलोर ।

(मेंबर ऐ. एस. सि. एम. ए.)

३० वर्षों से बच्चों के रोगों में मशहूर

बाल-साथी

सम्पूर्ण आयुर्वेदिक पद्धति से बनाई हुई—बच्चों के रोगों में तथा बिम्ब-रोग, पेंठन, ताप (बुखार) खाँसी, मरोड़, हरे दस्त, दस्तों का न होना, पेट में दर्द, फेफ़डे की सूजन, दाँत निकलते समय की पीड़ा आदि को आश्चर्य-रूप से शर्तिया आराम करता है। मूल्य १) एक डिब्बी का। सब दवावाले बेचते हैं। लिखिए—वैद्य जगन्नाथ, बराच आफिस, नडियाद, गुजरात। यू. पी. सोल एजन्ट:—श्री केमीकल्स, १३३१, कटरा खुशालराय, दिल्ली।

स्वास्थ्य-दायक

जीवामृतम का इस्तेमाल करने से दुर्बल देह को बल, दुर्बल वीर्य को पटुता, निद्राहीनों को चैन की नींद, मांस-पेशियों को पुष्टता, सुस्त लोगों को चुस्ती, भुलक्कड़ों को स्मरण-शक्ति, रक्तहीनों को नया रक्त, बदहज़मी से हैरान लोगों को अच्छी भूख, पीले देहों वालों को तेज, आदि असंख्य लाभ पहुँचते हैं। यह एक श्रेष्ठ टानिक है जिसका औरत-मरद, सभी अवस्था वाले हमेशा सेवन कर सकते हैं।

जीवामृतम

शरीर की दृढ़ता, शक्ति और ओज के लिए

आयुर्वेदाश्रमम् लिमिटेड,

मद्रास–17

रावलगांव

ग्लूकोज, प्युअर दूध और शुद्ध शक्कर से बनाई हुई और बगैर हस्तस्पर्श किए बिना मशीन में ही पैक की हुई भरपूर व्हिटॅमिनयुक्त 'रावलगांव' मिठाइयाँ व टॉफियाँ पिछले दस बरस से सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। मुफ्त उपहार कॅटलॉग के लिए लिखिए।

नेमिचन्द पारसमल ॲण्ड कम्पनी

१२८–ए नैनिअप्पा नाईक स्ट्रीट

मद्रास–३

WE OFFER

Our Greetings & Good Wishes

TO THE READERS OF

CHANDAMAMA

& ALLIED MAGAZINES

on the Happy "DIWALI" day!

MAY "DIWALI LIGHTS" ILLUMINE YOUR HOMES
WITH HAPPINESS & DELIGHT!!

NORSK AVISPAPIR KOMPANI

(NORWEGIAN NEWSPRINT MAKERS LTD.)

P.O. BOX 178, KIRKEGATEN 15,

OSLO, NORWAY

"Paper Suppliers to your Chandamama"

We Wish all our Patrons

A HAPPY
DIWALI

K. ORR & CO.

IMPORTERS & INDENTING AGENTS FOR
PAPERS, PRINTING INKS & MACHINERY

40, CHINNATHAMBI ST.,
MADRAS-1

Cable: PRESUNDRY Phone: 3519

एम. ए. पी. इन्डस्ट्रीज़ :: तोंडियारपेट, मद्रास-२१

Cable :
BHUVANA

PHONE
8291

स्वदेशी टाइप फौंड्री

(१९०६ में स्थपित)

५१, गुरुप्पा चेट्टी स्ट्रीट,
चिन्ताद्रिपेट :: मद्रास–२

दीपावली के इस आनन्द दायक अवसर पर अपने मित्रों और ग्राहकों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

११ भाषाओं में टाइप बनाते हैं। पेरफोरेटर्स, लेड कटर्स, मीटरिंग मेशीन्स, पंचिंग मेशीन्स वगैरह बनाते हैं।

बारफिडल से लेकर प्लाटेन तक सब तरह की मेशीनें, रोलर काम्पोजिशन वगैरह सब तरह के प्रिंटिंग सामान हमेशा स्टाक में रहते हैं।

हमको लिखिए :—

टी. ए. सुब्रह्मण्य मुदलियार
मैनेजिंग पार्टनर

छपाई एक कला है !

किन्तु

उसके लिए भी अच्छी मशिनरी का होना आवश्यक है ।

यदि आप

इस कला में उन्नति करना चाहते हैं तो,

निम्न पते पर पत्र-व्यवहार कीजिए ।

PIVANO

JOHNE PERFECTA

SEMI AUTOMATIC

FULLY AUTOMATIC

हम नए तथा रीबिल्ट प्रेस, कागज़ काटने की मशीनें, ब्लाक्स बनाने का सब सामान, केमेरा और छापेखाने का सब छोटा बड़ा सामान तथा टाईप बेचते हैं !

*

दी स्टैण्डर्ड प्रिन्टिङ्ग मशिनरी कम्पेनी

१२/८१ शम्भुदास स्ट्रीट, : जी. टी. मद्रास

छोटी एजन्सियों की योजना

★

चन्दामामा रोचक कहानियों
की मासिक पत्रिका है।

अगर आपके गाँव में एजण्ट नहीं है तो चुपके से २) भेज दीजिए। आपको चन्दामामा की सात प्रतियाँ मिलेंगी। जिनको बेचने से ॥≈) का नफा रहेगा।

★

लिखिए :

चन्दामामा प्रकाशन

वडपलनी :: मद्रास-२६

ग्राहकों को एक जरूरी सूचना

*

१. ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिए। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न हो उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकता।

२. पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते के साथ सूचना देनी चाहिए।

३. प्रति नहीं पाई तो १०-वीं के पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद को आने वाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

—व्यवस्थापक, 'चन्दामामा'

हमारे हितदायकों को
दीपावली की शुभ कामनाएँ

सब प्रकार की कारोबारी और सुन्दर छपाई के लिए

'नेलसन-टाइप' का प्रयोग करें।

'चन्दामामा' भी 'नेलसन-टाइप' से ही छपता है।

नेल्सन एण्ड कम्पेनी

(दि फाइन आर्ट टाइप फौन्ड्री)

स्थापित : १९१९

स्वामी पिल्ले स्ट्रीट :: चूले, मद्रास-७

फ्याक्टरी :

अजीकरै :: मद्रास-१०

चन्दामामा

संपादक : चक्रपाणी

दीवाली

आओ बच्चो ! खुशी मनाओ !!
खुशी मनाओ ! दीप जलाओ !!

जग में जो छाई अँधियाली,
कलुषित मुख ढाँपे निशि काली !
उसको सरपट दूर भगा दो ;
घर घर छा जाए उजियाली !
लहरा उठें उमंगें मन में ;
फिर आशा की ज्योति जगाओ !
किस ने कहा—'अँधेरा गहरा,
बड़ा कड़ा पीड़ा का पहरा !'
बन्धन तोड़ जगी यह ज्वाला
बाँध किरन का सर पर सेहरा !
स्वागत करो ज्योति का बच्चो !
आओ, गीत खुशी के गाओ !

छूट रही फुलझड़ी हँसी की,
बिखरी मोती-लड़ी खुशी की।
दीपक कमल फूलते पग-पग,
गोद भर रही निशि अमा की !
तुम भी तो दीपक हो बच्चो !
अपने घर का नूर बढ़ाओ।
आज निशा का बदला चोला,
दीपक बन जलता हर शोला।
नवयुग के पग की आहट सुन,
हर जन का मन सुख से डोला !
नवयुग के स्वागत में बच्चो !
घर घर बन्दन वार सजाओ !

आओ बच्चो ! खुशी मनाओ !!
खुशी मनाओ ! दीप जलाओ !!

वर्ष 5—अङ्क 3
नवम्बर 1953

एक प्रति 0-6-0
वार्षिक 4-8-0

आदमी और एक साँप

जीना हमें बताता है मरने की एक [illegible]।
एक आदमी से भेंट हुई एक साँप की।
जिसका ख्याल था कि ये संसार के मजे,
मेरे ही बुद्धि-बल से हैं ये इस तरह सजे!

एक साँप जाता रस्ते पे आया उसे नजर;
पकड़ा उसे और थैले में फिर रखा बाँध कर।
कंधे पे रख के थैले को वह खूब खुश हुआ;
और गर्व से वह साँप को फिर यूँ कहने लगा—

'एहसान फरामोश! हो तुम कितने विष भरे—
पीते हमारा दूध; हमीं को हो काटते......!
फुंकार करके फिर यूँ कहा उस से साँप ने—
'एहसान फरामोश तो खुद आदमी ही है!

विष भी इसकी देह में है खूब ही भरा!
और कौन इससे बढ़के नहीं कोई दूसरा!
एक गाय देख—पास जाके उसके ये डटे!
बतलाके सारी बात कहा—'फैसला करें!'

तब सुन के बात आदमी से गाय ने कहा—
'फूले हो पीके दूध जो तुम मेरे बच्चे का,
फेंका है इस बुढ़ापे में तुमने मुझे कहाँ!
चरने को भी जगह नहीं है मेरी कुछ जहाँ!

इतनी बुरी नहीं है, सुनो, जाति सांप की,
जितनी कि आदमी की है जाति खुद बुरी!!'
तब उसने जाके पूछी यही बात बैल से:
'सच्ची है मेरी बात कि नहीं—दे बता मुझे!'

तब बैल बोला—'खेत सदा जोतता रहा,
बदले में जिसके तुमने मुझे फल है यह दिया!
जो बेच देते बूढ़ा हुए पर कसाई को;
कितने स्वार्थी हो—कभी देखते भी हो?'

यों जलके आदमी ने कहा—'जानवर कहीं का!'
तब जाके एक पेड़ से बोला वह—'सच बता!'
कहने लगा वह पेड़—'सुनो, कान खोल कर;
मानव की हिंसा जाती नहीं उसको छोड़ कर!

* * *

फल फूल सारी उम्र मेरे तोड़ते रहे,
और इस नरक में फेंक दिया तुमने फिर मुझे!'
गुस्से से फिर तो आदमी वह चीखने लगा,
थैले को जड़ से पेड़ की वह पीटने लगा!!

बात आदमी को सच्ची कभी भाती ही नहीं,
दोषों पै अपने उसकी नजर जाती ही नहीं;
हो जाते हैं अपने भी पराए—सुनके अच्छी बात!
सच, भाती नहीं किसी को कभी सच्ची बात!!

तमसो मा ज्योतिर्गमय!

चन्दामामा के प्यारे पाठको! अँधेरे और उजाले की लड़ाई तुम लोग रोज देखते हो। सूरज का प्रकाश अँधेरे को खदेड़ कर जाने कहाँ भगा देता है। लेकिन सच-मुच अँधेरा क्या भाग जाता है? अगर भाग जाता तो शाम को लौटता कहाँ से? यह तो ऐसा लगता है—जैसे दो भाई-बहन आपस में आँख-मिचौनी का खेल खेलते हों: कभी दिन रात की आँखें बन्द कर देता है, कभी रात दिन की आँखों पर पट्टी बाँध देती है। यों यह खेल न जाने कब से यहाँ चलता आ रहा है, और आश्चर्य तो यह है कि यह खेल हमेशा बराबर पर ही छूटता आया है—न कभी दिन हारता है, न कभी रात हारती है। बारह घण्टे के लिए एक जीत जाता है, तो फिर, बारह घण्टे के लिए दूसरा आ धमकता है।

लेकिन, तुम सोच कर बताओ तो सही, कि इस खेल का रहस्य क्या है? इसकी असलियत जानने के लिए हम तुम्हें एक उपाय बताए देते हैं। जरा किसी तरह कोई आसमान से इस आग के गोले (सूरज) को कहीं फेंक दे, तो फिर देखो—इस दुनिया की क्या हालत होती है! फिर सब जगह किसका राज फैल जाता है? तुम उछल कर कह उठोगे—कि तब तो सब जगह अँधेरा ही अँधेरा रह जाएगा।

सच, अगर यह सूरज न रहे, तो सब जगह ऐसा अँधेरा हो जाए, कि लोगों का दम घुटने लग जाए। लेकिन इस दम-घोंट अँधेरे के साथ लड़ने ही के लिए तो दया कर के भगवान ने इस आग के गोले को आसमान में उछाल दिया, जो न जाने कब से अंधकार के साथ मोर्चा लेता आ रहा है। अगर यह पृथ्वी नारंगी की तरह गोल न होती, मैदान की तरह सपाट रहती, तो फिर अंधकार को हम कहीं देख नहीं पाते। तब उसके छिपने के लिए कहीं जगह ही नहीं रह जाती। अब देखो, अमा की रात कितनी गहरी अँधेरी होती है, हाथों-हाथ नहीं सूझता है। घुप अँधेरे को भगाने के लिए तुम चारों ओर दीपक तथा फुलझड़ियों से रंग बिरंगी रोशनी की वर्षा कर देते हो। हमें खुशी है, कि तड़क-भड़क के इस अनूठे अवसर पर रंग-बिरंगे पर फैला कर यह 'चन्दामामा' प्यारे पाठकों कि हाथों पर आ उतरेगा!!

मातृ-ऋण

पुराने जमाने की बात है। उस समय विष्णु भोज काशी का राजा था। तभी भगवान बोधिसत्व, एक खूबसूरत बछड़े के रूप में, पैदा हुए। वह बछड़ा काले रंग का था, और देखने में बड़ा ही लुभावना लगता था। उस बछड़े को देख कर उसका मालिक उस पर अत्यन्त मुग्ध रहने लगा।

उस बछड़े का मालिक एक गरीब औरत के घर में रहता आया था। मगर कुछ दिनों के बाद उसे वह गाँव छोड़ देना पड़ा। जाते समय उसने घर-भाड़ा के रूप में वह बछड़ा उस बूढ़ी को दे दिया।

बूढ़ी माँ के कोई बाल-बच्चा नहीं था। इसलिए उस काले बछड़े को उसने अत्यंत लाड़-प्यार से पाला-पोसा। बूढ़ी माँ भात पकाने के लिए जब चावल धोती, तब उस धोवन को, और जब माड़-पसाती तो उस माड़ को, चुनी-भूसी में मिला कर बढ़िया सानी तैयार करती और अत्यंत स्नेह-मोह से उस भोले जानवर को खिलाती-पिलाती। रोज नहर में ले जाकर खूब अच्छी तरह उसे धोती-पोंछती थी। इतने लाड़-प्यार से पाले हुए उस बेटे-से बछड़े को वह बूढ़ी माँ कभी खूँटे से नहीं बांधती थी। खेलते-कूदते उस बछड़े के माथे में सहसा सींग निकलने लगे। गाँव के और पशुओं के साथ वह स्वेच्छा-पूर्वक घूमा-फिरा करता था। गाँव के लड़के उसकी पूँछ पकड़ कर शौक से दौड़ते-फिरते थे और उसके साथ दिन भर अनेक खेल खेला करते थे।

एक दिन उस काले बछड़े ने अपने मन में सोचा—"मुझे पालने वाली यह बेचारी

महेन्द्र प्रताप सेठी

बूढ़ी माँ अत्यंत गरीब है। मेरे लिए जान देती है, जी तोड़ कर मेहनत करती है। अगर कहीं से मैं कुछ पैसे कमा लाऊँ, तो इसकी तकलीफ़ कुछ कम हो जाए! धन कैसे कमाया जाए—' इस फ़िक्र में वह रहने लगा।

ऐसे ही समय पाँच सौ गाड़ियों पर अनाज लाद कर एक व्यापारी उस गाँव से गुजरने लगा। वे गाड़ियाँ डगर से आ रही थीं। बीच में एक सोता आ पड़ा, जिस में बालू ही बालू भरी हुई थी।

कितनी कोशिशें की गईं, लेकिन व्यापारी का एक भी बैल बालू में गाड़ी नहीं खींच सका! सब गाड़ियाँ सोते के किनारे खड़ी रह गईं। जहाँ-तहाँ से खोज-खाज कर बैल लाए गए, पर फायदा कुछ भी नहीं हुआ।

उस समय काले बछड़े के रूप में भगवान बोधिसत्व अपने साथी जानवरों के साथ सोते के दूसरे किनारे पर घास चर रहे थे। उन पशुओं में से कोई उसके काम आ सकता है या नहीं—यह देखने के लिए वह व्यापारी वहाँ आया।

उस व्यापारी की नजर उस काले बछड़े पर पड़ी। उसने सोचा—'यह बछड़ा काम का मालूम होता है। इसकी सहायता से मेरी गाड़ियाँ सोते को अवश्य पार कर जाएँगी।'

फौरन उस व्यापारी ने चरवाहों से पूछा—"अरे लड़को! वह काला बछड़ा किसका है? थोड़ी देर के लिए इसे ले जाने दोगे? मुझे गाड़ियों को सोते के उस पार ले जाना है। इस के लिए जो उचित समझो, दे दूँगा।' चरवाहे बोले—'ले जाकर इसे गाड़ी में जोत लो न! इसके लिए पूछ-ताछ क्या?'

व्यापारी ने उस बछड़े की नाक में नाथ डाल दी, और उसे खींच ले जाना चाहा। लेकिन वह जरा भी अपनी जगह से न टसका।

तब उस व्यापारी ने अपने मन में सोचा—'यह बछड़ा अपनी मेहनत का

शायद माकूल मेहँताना चाहता है।' ऐसा सोच कर वह बोला—'वृषभराज, मेरी पाँच सौ गाड़ियों को तुम सोता पार करा दो। अगर तुम मेरी यह सहायता कर दोगे, तो हर गाड़ी के लिए मैं दो-दो मुहरें यानी कुल एक हजार मुहरें तुम्हें भेंट करूँगा।'

जैसे ही व्यापारी ने यह बात कही, बछड़ा उछला और व्यापारी के बैलों के पास जा खड़ा हुआ। व्यापारी ने उसे गाड़ी में जोत दिया। एक ही झटके में वह गाड़ी को खींच कर उस पार ले गया। इस तरह उसने पाँच सौ गाड़ियों को उस पार पहुँचा दिया। काम पूरा होते ही व्यापारी ने एक गल-पट्टी में पाँच सौ मुहरें डाल कर उसे बछड़े के गले में बाँध दिया। यह देख कर बोधिसत्व ने सोचा—'इस व्यापारी के मन में कपट पैदा हो गया है। अपनी बात से चूक गया है! अच्छा! देख ले....' यह सोच कर वह सब से बड़ी गाड़ी के आगे रास्ता रोक कर खड़ा हो गया और हजार कोशिश करने पर भी वहाँ से नहीं हटा!

व्यापारी बोला—'अरे! यह मूक जानवर कितना चतुर है! इसे मालूम हो गया कि जितना देना चाहिए, मैंने उसका आधा ही

इसके गले में बाँधा है!' उसने बाकी पाँच सौ मुहरें एक दूसरी गल-पट्टी में डाल कर उसके गले में बाँध दीं।

'वृषभराज! तुम्हारी मेहनत के लिए जो देने का वचन मैंने दिया था, वे हजार मुहरें तुम्हारे गले में लटक रही हैं!'

जैसे ही व्यापारी ने दूसरी पट्टी उसके गले में बाँधी, वह बछड़ा उछला और गल-पट्टी को झन-झन बजाता, बूढ़ी माँ के पास दौड़ गया।

वह काला बछड़ा गली से दौड़ा जा रहा था। झन-झन की आवाज़ लड़कों को अपनी ओर खींच रही थी। आज वह अपनी माँ के

पास जाने के लिए आतुर हो रहा था। इसलिए अपने साथ खेलने वाले छोटे बच्चों से बच कर वह सीधे अपनी माँ के पास जा खड़ा हुआ।

एक-दो नहीं... पूरी पाँच सौ गाड़ियों को एक बारगी बालू से खींच ले आने के कारण, वह काला बछड़ा बहुत थक गया था। दोनों आँखें अङ्गारों की तरह लाल हो उठी थीं।

यों थके-माँदे अपने दुलारे बछड़े को देखते ही वह बूढ़ी माँ उठ कर उसे सहलाने लगी। गले पर हाथ फेरते हुए उसकी गल-पट्टियाँ उसे नज़र आईं।

'यह सब कहाँ से ले आए हो, मेरे सोने के पहाड़ ...!' आश्चर्य से वह पूछ ही रही थी कि चरवाहे दौड़े आए और उन्होंने सारी घटना बूढ़ी को सुना दी।

यह सुन कर बूढ़ी माँ की आँखों में आँसू छल-छला आए—'कितनी कड़ी मेहनत उठाई तू ने मेरे लिए, मेरे लाल! ये मुहरें क्यों! क्या करूँगी लेकर मैं ये मुहरें! तू खुशी से खा-खेल, और मेरी आँखों से ओझल न हो—मेरी इच्छा इतनी ही है! फ़िज़ूल की तकलीफ़ तू क्यों उठाता है। आ लाल, तू मेरे पास आ!'—कहती वह बूढ़ी माँ थकावट दूर करने के लिए उस काले बछड़े के शरीर में तेल मल कर गरम-गरम पानी से नहलाने लगी। फिर उसने गरम-गरम माड़ उसे पीने को दिया। इस तरह और न जाने उसने कितने उपचार उस बछड़े के लिए किए! इस तरह बोधिसत्व ने मातृ-ऋण चुकाया और बहुत दिनों के बाद अपना चोला बदल डाला।
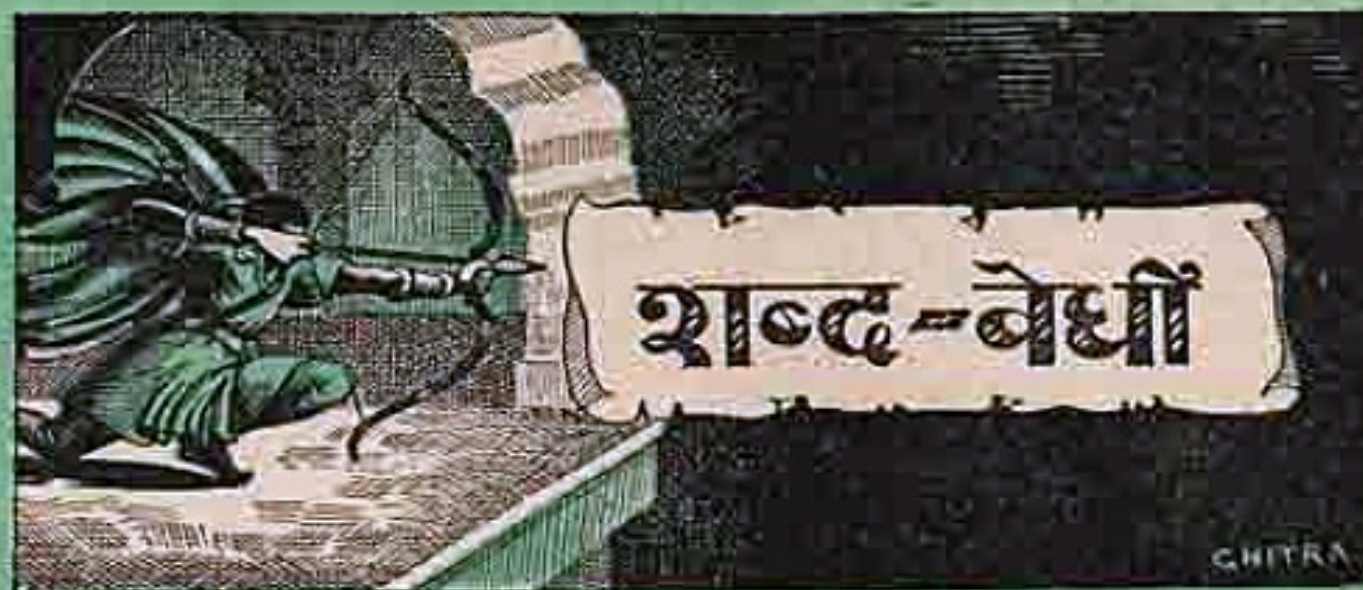
[भीमवर्मा देवलपुर में डेरा डाले था। करुणा को जबरदस्ती मँगवा कर ब्याह करने का निश्चय किया। विजयवर्मा ने यह भेद सुना, और चन्द्र-दुर्ग के मालिक से मिल कर भीमवर्मा के डेरे पर धावा किया। धावा बेकार हुआ। चन्द्र-दुर्ग का मालिक घायल हुआ। विजयवर्मा फिर अपने डेरे पर वापस आया—इसके बाद पढ़ो!]

विजयवर्मा ने अपने साथियों को उस टूटी धर्मशाला में जमा किया। भीमवर्मा के पंजे से करुणा को निकालने के उपाय सोचे जाने लगे। उसे मालूम हो गया था कि भीमवर्मा चुप-चाप करुणा की शादी किसी दूसरे से करने जा रहा है। नाथूसिंह ने कहा—'वह दूल्हा कौन है? इसकी चिन्ता करते यहाँ बैठे रहने से कोई फायदा नहीं होगा, सीधे भीमवर्मा के डेरे पर चढ़ जाना चाहिए, तभी मालूम होगा कि वह आदमी कौन है?'

'वाह-वा! नाथूसिंह तो अकल में अफलातून ही मालूम होता है!' सबों ने कहा।

'राय तो बहुत अच्छी है। लेकिन बिल्ली के गले में घण्टी बाँधे कौन?'—विजयवर्मा ने कहा।

'और कौन?—हम दोनों ही, समझे? चलो तैयार हो जाओ'—कहता हुआ नाथूसिंह उठ खड़ा हुआ। विजयवर्मा अपने अनुचरों को होशियारी से रहने की बात समझा-बुझा कर नाथूसिंह के साथ चला गया।

नाथूसिंह ने सीधे जङ्गल का रास्ता पकड़ा। कुछ दूर तक उस रास्ते पर चलने के बाद वह रास्ता छोड़ कर नाथूसिंह विजयवर्मा को घनी झाड़ियों के बीच ले गया।

दिन-दोपहर को भी वहाँ घोर अंधकार रहता था। नाथूसिंह ने विजयवर्मा को ले जाकर पेड़ों के बीच खड़ा कर दिया। फिर इधर-उधर फैली हुई जङ्गली लताओं के बीच कुछ सूखी लकड़ियाँ फैला कर एक छोटी कोठरी-सी बना ली।

'यही मेरा घर है, अच्छा है न?' नाथूसिंह ने विजयवर्मा से पूछा।

'मैं तुम्हारा घर देखने यहाँ नहीं आया हूँ। करुणा को बचाने का उपाय हम को सोचना चाहिए। तुमने जो सोचा है वह उपाय क्या है?' विजयवर्मा गरज कर बोला।

नाथूसिंह हँसा, और उसने चटाई के नीचे से कुछ पुराने कपड़े निकाले। फिर सन्देह से देखते हुए विजयवर्मा को दिखा कर कहने लगा—

'अगर हम को भीमवर्मा के डेरे पर धावा बोलना है तो वेश बदल कर ही जाना पड़ेगा। उस के लिए सब से अच्छा वेश होगा संन्यासी का। उस वेश में रह कर जरूरत पड़ने पर हम जहाँ चाहें वहाँ धावा बोल सकते हैं। इसकी सहूलियत हमें रहेगी।'

यह उपाय विजयवर्मा को खूब जँच गया। नाथूसिंह ने एक पल में अपना वेश बदल लिया। गेरुआ कपड़े पहन लिए, गले में रुद्राक्ष की माला डाल ली और हाथ में कमण्डल ले लिया। देखने से ऐसा मालूम होता था कि हिमालय पहाड़ पर से अभी-अभी कोई योगिराज उतरा आ रहा है। विजयवर्मा ने भी वही वेश धारण किया। दोनों ने एक दूसरे को देखा और दोनों खिल-खिला पड़े।

‘जय सीताराम !’ नाथूसिंह ने कहा।
‘जय सीताराम !’ विजयवर्मा ने जवाब दिया।

‘यह जय सीताराम सब के लिए अच्छा है। इसके साथ-साथ दो-एक और वाक्य याद कर लो।’ विजयवर्मा ने कहा।

‘अलख निरंजन! बम शङ्कर—काँटा लगे न कङ्कर!’—नाथूसिंह ने नारा लगाया।

नाथूसिंह के भोलेपन को देख कर विजयवर्मा खूब हँसा। मुँह से निकल पड़ने वाले शब्दों को छोड़ कर नाथूसिंह को उनके अर्थ, भाव और उनकी पवित्रता आदि बातों से कोई सरोकार नहीं था।

आगे-आगे नाथूसिंह चला, उसके पीछे-पीछे विजयवर्मा चलने लगा। दोनों जङ्गल पार कर के सीधे नर्मदा नदी के किनारे पर आ गए। वहाँ मल्लाहों में बड़ा भारी कोलाहल मचा हुआ था।

‘पिछली रात को किसी ने मेरी नाव उड़ा ली। उसका अब तक कोई पता नहीं लगा। उस बदमाश का अगर पता चलता तो खड़े-खड़े उसके प्राण खींच लेता!’ एक नाव वाले ने कहा।

उसके चारों ओर जो लोग जमा थे इसी भाव में भरे थे। यह देख कर विजयवर्मा

के होश उड़ गए और वह सोचने लगा कि भाग्य का मारा अगर कहीं यह हमें पहचान ले तो जुल्म ही हो जाएगा।

‘जय सीताराम !’ कहता हुआ नाथूसिंह उस भीड़ के पास पहुँचा और बोला—‘बचो! क्या गोल-माल हो रहा है यह सब!’

यह सुनते ही नाविक गण उन दोनों संन्यासियों के चारों ओर जमा हो गए। विजयवर्मा का दिल धड़क ही रहा था, अब यह शंका हुई कि अगर कहीं भूल से भी नाथूसिंह के मुँह से इसका भेद खुल गया, तब क्या होगा! लेकिन इतनी

दूर तक आ जाने पर वह कर ही क्या सकता था।

'पिछली रात के तूफ़ान में किसी ने हमारी नावें उड़ा लीं। वे नावें अभी कहाँ हैं, और उन्हें चुरा ले जाने वाला कौन है?— जरा ध्यान करके हमें बताने की कृपा करें, महाराज! आप की इस दया को हम कभी नहीं भूलेंगे।' नाविकों ने प्रार्थना की।

'इस छोटी-सी बात के लिए गिड़-गिड़ाते क्यों हो बचो!' नाथूसिंह ने कहा। फिर नर्मदा नदी की ओर इशारा करते उसने कहा, 'तुम्हारी नावें सब नर्मदा नदी के पेट में पड़ी हैं—वहाँ! उन्हें चुराने वाले—देखो उस मकान में रहते हैं, समझ गए?'

यह सुनते ही वहाँ एक भी ऐसा मल्लाह नहीं था, जो गुस्से से न जल उठा हो!— 'चलो-चलो! उन चोरों की खबर ली जाए! उन दुष्टों ने हमारा पेट काटा है। उनकी साँस बन्द कर देनी चाहिए!!' कहते हुए, जिस के हाथ में जो हथियार लगा, लेकर सब तैयार हो गए।

विजयवर्मा यह सब बड़ी गम्भीर दृष्टि से देख रहा था। मन-ही-मन नाथूसिंह की चातुरी पर खुश भी होता था और डरता भी था कि कहीं भूल से वह बात खोल न दे!

नाथूसिंह ने उन नाविकों को उत्साहित किया—'बचो! यह जल्दी-बाजी का काम नहीं! हम दोनों को पहले उस पार उतार दो। देवलपुर के उस मकान में भोज करने वाले सामन्तों को हम देख-सुन आते हैं। फिर तुम लोग उन से बदला ले लेना!'

'तो महाराज! आप लोग फिर कब लौटेंगे?' आतुर होकर मल्लाहों ने पूछा।

'कब क्या! अभी ही आए जाते हैं!' अन्यायियों के हाथ से सताए हुए तुम लोगों को न्याय दिलवाना ही हमारा काम है!

इसलिए पहले हम दोनों को नदी पार उतार दो। उस मकान से नदी पार कर आने वाले किसी को भी हमारे आने के पहले निकलने नहीं देना। वहीं पर उसे बांध कर रखना!' नाथूसिंह ने उन्हें यह आदेश दिया।

संन्यासी की यह बात सुन कर मल्लाह खुशी से भर गए! उन लोगों ने समझा कि हमारी रक्षा के लिए ही इन दोनों योगियों को भगवान ने यहां भेज दिया है! फौरन एक नाव पर दोनों साधुओं को चढ़ा कर वे उस पार ले गए।

भीमवर्मा के उस मकान के पास ही नाव आकर लगी। उस समय वह मकान धूम-धाम से गूँज रहा था। सैकड़ों आदमी जमा थे। घर के भीतर बधावे के बाजे बज रहे थे।

विजय ने कहा—'शादी की तैयारी हो रही है। जबरदस्ती करुणा को किसी के गले बांधने जा रहे हैं ये लोग!'

उसकी बातों की ओर ध्यान दिए बिना 'जय सीताराम!' कहता हुआ नाथूसिंह भीड़ में मिल गया और सीधे मकान की ओर चला। विजयवर्मा भी उसके पीछे-पीछे 'जय सीताराम!'—कहता चल पड़ा।

विजयवर्मा का सन्देह सच निकला! घर में इधर-उधर घूमने वाले दास-दासियों से और वहां जमा हुए लोगों की बातों से

उसे पता चल गया कि यह करुणा का ही जबरदस्ती विवाह होने जा रहा है। लेकिन दूल्हे का कहीं पता नहीं लग रहा था।

बिजयवर्मा के दिल को काँटे की तरह चुभने वाली यह बात भी साफ़ हो गई। रङ्ग-बिरङ्गे कपड़े पहने हुए, बेशकीमत गहने-जेवर लादे हुए, दो-तीन आदमी एक, बगल में बैठ कर कुछ बातें कर रहे थे। 'जय सीताराम!' कह कर नाथूसिंह उनके पास आ खड़ा हुआ।

'ओह-हो! ये तो कोई साधु जान पड़ते हैं! शायद यह हमारी शङ्काओं का समाधान कर दें। पूछ देखो तो भला!'—वे आपस में कहने लगे।

नाथूसिंह ने कमण्डल उठा कर गम्भीर स्वर में कहा—'बच्चा! तुम्हारा सन्देह क्या है?' बिजयवर्मा उसके पास ही खड़ा चुप-चाप यह सब देख रहा था!

'क्या कबन्धवर्मा से करुणा का विवाह सुकुशल हो जाएगा?' उन्होंने सवाल किया।

'ऐसा सन्देह तुम्हें क्यों हो रहा है?' नाथूसिंह ने भवें उठा, होंठ सिकोड़कर, पूछा।

'आप लोग तीनों काल की बात जानने वाले महात्मा हैं। सब बातें आप को मालूम ही होंगी! मगर आप चण्डीदास के दल में तो नहीं हैं न?'—एक ने कहा।

यह सुनते ही बिजयवर्मा का दिल धड़क उठा। नाथूसिंह ने बे-परवाही से कहा—

'बच्चो! तुम जो कह रहे हो, वह हम सबों से कोई छिपी बात नहीं है! द्रोही और डाकुओं के सरदार, उस चण्डीदास के साथ हमको मिलाना बड़ा भारी अपराध है! इसके लिए हम तुम्हें शाप दे देते! लेकिन यह तुम्हारा पहला अपराध है, इसलिए क्षमा कर देते हैं।' आँखें फिराते हुए नाथूसिंह ने कहा।

नाथूसिंह की बात सुन कर वे तीनों थर-थर काँपने लग गए। 'क्षमा कीजिए महाराज!' कहते हुए तीनों आदमी साधुओं के पैरों पर गिर पड़े!

'उठो! उठो!! पागल बच्चो! हमने तुमको माफ कर दिया!'—नाथूसिंह ने कहा। साठ साल तक हिमालय की गुफाओं में रह कर तुम मूर्खों की गालियाँ सुनने के लिए हमने तपस्या नहीं की थी। जाओ, हमने तुम्हारी बात सुन ली! करुणा से कबन्धवर्मा का विवाह सुकुशल हो जाएगा!' कहता हुआ नाथूसिंह वहाँ से चल पड़ा।

विजयवर्मा को बेहद गुस्सा आया। कबन्धवर्मा के बारे में अभी-अभी कुछ मालूम हुआ था। 'पचास साल के उस बूढ़े कबन्धवर्मा के साथ करुणा की शादी! भीमवर्मा के इस जाल में पड़ी हुई करुणा को किसी न किसी तरह बचाना ही होगा!'—विजयवर्मा ने सोचा। नाथूसिंह दो ही 'जय सीताराम!' कहता हुआ सारे मकान में घूम रहा था। संन्यासी के वेश में घूमने वाले इन साधुओं को किसी सिपाही ने नहीं रोका। लेकिन गुरुओं को न चाहने वाले साधुओं को देख कर किसी को सन्देह ही क्या हो सकता था!

कुछ देर यों घूमने के बाद विजयवर्मा नाथूसिंह को एक ओर ले गया। जहाँ आदमियों की भीड़ न थी, वहाँ जाकर वे दोनों एकान्त में बैठ गए। 'अब क्या करना चाहिए?' इस पर दोनों विचार करने लगे।

इस विवाह को किसी न किसी तरह रोकना ही होगा। इसलिए फौरन हम लोग धर्मशाला लौट चलें और वहाँ से कुछ लोगों को साथ ले आवें!'—विजयवर्मा ने कहा।

'यह क्या कहते हो ! इस से तो कुछ फायदा नहीं, अभी आधे-घण्टे में बरात जङ्गल वाले मन्दिर में जाएगी। विवाह मन्दिर में ही होगा। अपने आदमियों को बुलाने का समय अब नहीं रहा !'—नाथूसिंह ने कहा।

'तो क्या करुणा की शादी इस बूढ़े के साथ हो ही जाएगी ?'—विजयवर्मा ने गुस्से से पूछा।

नाथूसिंह हँस पड़ा ! उसके बाद दूर की दीवार से सट कर खड़े हुए एक आदमी की ओर उसने इशारा किया। विजयवर्मा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। जो दीवार से सट कर खड़ा हुआ जो विवाह की तैयारी देख रहा था, वह चण्डीदास का आदमी था विजयवर्मा ने अपने चारों ओर देखा, फिर 'जय सीताराम !'—कहता हुआ उस आदमी के पास पहुँच गया। फिर झुक कर उसकी हस्त-रेखा देखने के बहाने से धीरे-धीरे बोला—

'आधे-घण्टे में बरात जङ्गल के मन्दिर में पहुँच जाएगी ! समय नहीं है, यह बात फौरन जाकर चण्डीदास से कहो !'

उसने अचम्भे में आकर पूछा—'आप कौन हैं ?'

'मुझे पहचानते नहीं ? जाओ, अच्छा ही है ! पहले जल्दी चण्डीदास के पास दौड़ जाओ !'—विजयवर्मा ने कहा। यह सुन कर चण्डीदास का आदमी वहाँ से जल्दी-जल्दी चला गया।

कुछ देर के बाद बरात जङ्गल वाले मन्दिर की ओर रवाना हुई। शादी की शहनाइयाँ, घर-बार के लोग, देखने वालों की भीड़,—एक हो-हल्ला मचा हुआ था। विजयवर्मा और नाथूसिंह भी उस भीड़ में मिल गए और मन्दिर की ओर चलने लगे।

[अभी और है]

विकास की अन्तिम सीढ़ी पर

यह चित्र बताता है कि जीवन की सीढ़ियाँ किस तरह बढ़ती गई हैं। ये सीढ़ियाँ वे हैं जब के जीवों में रीढ़ आ गई थी। जिस का पहले के जीवों में अभाव था। रीढ़ वालों में सब से पुरानी जीव मछलियाँ हैं। उनके बाद कछुए जाति के जीव हैं जो जल और स्थल दोनों के निवासी हैं। इस के बाद टुकड़ा होता है, एक तरफ 'ऐम्फबीयनस' से रेंगने वाली जाति पैदा हुई, और उन से पक्षी पैदा हुए। दूसरी ओर दूध पिलाने वाले जीव पैदा हुए जिन के अंतिम छोर पर आदमी आया।

कावेरी की उत्पत्ति

पुराने जमाने में शूर पद्मनाभन नामक एक राक्षस रहता था। वह बड़ा बलवान और जालिम था। उसके जुल्मों को न सहन कर चौदहों लोक थर-थर काँपने लग गए। स्वर्ग के देवता भी काँप उठे थे!

सिर्फ देवता ही नहीं, उस राक्षस के सामने देवेन्द्र को भी सिर झुका कर खिसक जाने की नौबत आ गई। इसलिए देवेन्द्र सीधे पृथ्वी पर उतर आए और एक जङ्गल में बाँस के पेड़ के रूप में पैदा हुए।

कुछ दिनों के बाद गरमी का मौसम आया। जङ्गल के सभी पेड़-पौधे सूख गए। लेकिन देवता का अंश होने के कारण सिर्फ वह बाँस ही हरा-भरा रह गया। यह देख कर देवेन्द्र ने सोचा—'सभी पेड़-पौधे झुलस गए। सिर्फ मैं ही एक हरा-भरा रह गया हूँ। क्या यह अनुचित नहीं है! इससे मेरी कलई बड़ी आसानी से खुल जाएगी। अभी अगर मैं अपने प्रभाव से गङ्गा को धरती पर ले आऊँ तो मेरा भेद भी न खुले और इस तरह भगवान की आराधना करने का मौका भी मिल जाए।

इस प्रकार निश्चय करके देवेन्द्र ने गणेश की प्रार्थना की। प्रार्थना से प्रसन्न होकर गणेश प्रत्यक्ष हुए। देवेन्द्र ने उन से अपनी इच्छा कह सुनाई। गणेश ने इन्द्र की इच्छा पूरी करनी चाही और ध्यान धर कर देखा तो अगस्त्य के कमण्डल में ही उन्हें पानी दीख पड़ा।

फौरन गणेश ने कौए का रूप धारण किया वे और अगस्त्य के आश्रम को उड़ चले! वहाँ जाकर देखा कि अगस्त्य-मुनि

सीताराम चतुर्वेदी

तपस्या में लीन हैं। कौए के वेश में गणेश चुप-चाप कमण्डल के पास पहुँच गए और उसमें चोंच डालकर भाग खड़े हुए।

तब अगस्त्य के कमण्डल का वह जल धारा रूप में भू-लोक की ओर बह चला। बहता-बहता वह जल उस जङ्गल में पहुँचा, जहां देवेन्द्र बाँस के पेड़ के रूप में खड़े थे, और उसे भी सींच दिया।

कुछ देर के बाद अगस्त्य ने अपने कमण्डल की ओर देखा तो उसमें एक बून्द भी पानी नहीं था। नज़र उठा कर देखा तो एक कौआ उड़ता हुआ नज़र आया। ऋषि ने उसका पीछा किया, लेकिन चौदहों लोक दौड़ने पर भी वह उनके हाथ नहीं लगा।

आखिर महर्षि को दिव्य-दृष्टि से देखने पर मालूम हुआ कि वह साधारण कौआ नहीं है। तब उन्हें सभी बात मालूम हुई। अगस्त्य गणेश की ओर मुड़ कर बोले—'विघ्नहारी देव! तुम यों क्यों भागे-भागे फिरते हो! तुमने लोक-मङ्गल के लिए जो यह काम किया है, उसका मैं पूर्ण-रूप से समर्थन करता हूं। पर मेरे पास तो पूजा-अर्चा के लिए एक बून्द भी पानी नहीं रह गया, यह क्यों?' यह सुनते ही कौए के वेश-धारी गणेश ने अपनी चोंच से पानी भर कर अगस्त्य के कमण्डल में डाल दिया।

गणेश के द्वारा अगस्त्य के कमण्डल से चुरा कर लाया हुआ, वही जल भूमि पर गिरा और कावेरी नदी के रूप में बदल गया।

उसके बाद 'सुब्रह्मण्यस्वामी' पैदा हुए और इस लोक-कण्टक 'शूरपद्मनाभन' राक्षस का उन्होंने नाश किया। इसीलिए अब भी जब 'सुब्रह्मण्यस्वामी' का उत्सव होता है तो, आज भी उस 'शूरपद्मनाभन' की कथा कही-सुनी जाती है!

चारों ओर चहल कदमी

जर्मनी देश का रहने वाला एक आदमी हमारे देश में व्यापार करने आया हुआ था। उसने गणेश का चित्र देख कर एक हिन्दू से हँसते हुए पूछा—'इस तरह चूहे पर सवारी करने वाले पेट्र-देवता की पूजा करना क्या बेवकूफ़ी नहीं है?' उस पर उस हिन्दू ने कहा—'हमारे गणेश के चित्र में तुम जो यह हाथी की सूँड देखते हो, वह बुद्धि, बल, उदारता, धीरता आदि को जताती है। और छिपे-छिपे सुरङ्ग लगना, खोद-खाद कर दूसरों की धन-संपति चुरा ले जाना, और कहीं ले जाकर जमा करना-आदि करतूतें भी हमें मालूम हैं, यह बताने के लिए ही हमारे गणेशजी चूहे पर चढ़ते हैं!' यह जवाब सुन कर जर्मन ने सिर झुका लिया।

—◇—
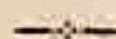
एक देश में तीन दर्जे वाली बसें चलती थीं। एक दिन रास्ते में एक बस बिगड़ गई। यह देख कर कन्डक्टर चिल्लाया—'पहले दर्जे के मुसाफिर बगैर हिले-डुले बैठे रहें! दूसरे दर्जे वाले उतर पड़ें और बस के साथ-साथ चलें। तीसरे दर्जे के मुसाफिर उतरें और बस को ठेल ले चलें!'

दाँत-काटी रोटी वाले दो मित्रों के बीच एक बार एक उलझन पैदा हो गई। वह उलझन बढ़ी और दोनों में बातचीत बन्द हो गई। यह अच्छा नहीं है, यह सोच कर दोनों के दोस्तों ने दोनों के बीच फिर से बातचीत करा दी। इस से सबों को खुशी हुई। यह देख कर उन दोस्तों में से एक ने एक मित्र को जाकर बधाई दी। उसके जवाब में उसने यह कहा—'पहले-पहल हम दोनों एक धागे की तरह रहते थे। हँसी-खुशी में हमारे दिन कट रहे थे। अब आप लोगों ने मिल कर उसके धागे से मेरा धागा जोड़ दिया है। इसलिए उस में गाँठ पड़ गई है। और अब वह मज़ा नहीं रहा। सच, जोड़िए सही—पर गाँठ कहाँ जाएगी?

—◇—

एक शहर में किसी समय चोरों का बहुत डर रहता था। लोगों की आँखों से नींद गायब हो गई थी। लेकिन निश्चिंत खुर्राटे लेकर सोने वाला दीख रहा था सिर्फ एक आदमी और वह था कुम्हार!

कुरुन देवी

अरावली के पहाड़ों में अण्डेया नाम का एक जङ्गल है। उस जङ्गल में एक पुरवा था। उस पुरवे के पास जवारी के खेत में मचान के ऊपर बैठी एक अठारह साल की लड़की चिड़ियों को उड़ा रही थी।

अचानक चिल्लाते और भागते हुए आदमियों का हो-हल्ला सुन पड़ा। 'क्या हो रहा है!' सोचती हुई वह लड़की मचान पर खड़ी होकर देखने लगी। देखते-देखते एक बड़ा जङ्गली-सूअर जान बचाने के लिए आकर उसके घने जवार के खेत में घुस गया। वह उसके छिपने के लिए अच्छी जगह थी! सूअर को खदेड़ते हुए आने वाले और उनके पीछे-पीछे आने वाला राजकुमार सब उस खेत के पास आकर खड़े हो गए और सोचने लगे, 'अब सूअर को कैसे निकाला जाय!'

यह देख कर मचान पर से वह लड़की बोली—'क्या सूअर को खोज रहे हो?' 'हाँ!'—उन लोगों ने कहा। यह सुन कर बाँस के एक पैनेफट्ठे को लेकर उस लड़की ने इस अन्दाज़ से खींच कर फेंका कि वह सूअर की पसली में जाकर लगा। सूअर चीखा और छटपटा कर ढेर हो गया। इसके बाद वह लड़की मचान से उतरी, सुअर की पूँछ पकड़ कर घसीटती हुई आई, और उसे राजकुमार के सामने पटक दिया!

उसके साहस और उसकी शक्ति पर रीझ कर राजकुमार अपने गले से मोतियों की माला उतार कर उस लड़की को देने चला।

इस पर झिझकती हुई वह बोली—'मुझे यह हार क्यों महाराज!' मैंने कौन-सा ऐसा बड़ा काम किया है!' यह कहती

वेद प्रकाश दत्ता

वह वहाँ से चली गई और मचान पर चढ़ कर पहले की तरह चिड़ियाँ उड़ाने लगी।

राजकुमार और उनके लोग कोई शिकार न कर सके थे और उसका पीछा करते-करते थक गए थे। इसलिए पास ही बहते हुए एक सोते के किनारे आराम करने के लिए सब बैठ गए। इतने में एक पत्थर कहीं से आकर राजकुमार के घोड़े के पैर में खट से लग।—'किसने यह शरारत की—' कह कर लोग चारों ओर देखने लगे! तो दिखाई पड़ी मचान पर वह लड़की जो खड़ी गुलेल से चिड़ियाँ उड़ा रही थी! यह देख कर राज-परिवार का एक आदमी दौड़ा हुआ आया और कहने लगा—'अरी! तूने बहुत बड़ा अपराध कर दिया है! कौन-कहाँ है—यह देखे बगैर तुम गुलेल चलाती रहती हो!' यह सुन कर लड़की फौरन मचान से उतर पड़ी और जवार की कुछ बालें तोड़ कर राजकुमार के सामने आ खड़ी हुई—'मेरी गलती माफ कर दीजिए और यह भेंट मन्जूर कीजिए!' गुस्सा किए बगैर राज-कुमार ने कहा—'कोई बात नहीं!'

राजकुमार को तो गुस्सा नहीं आया। लेकिन उनके लोगों के मन में लड़की का यह काम खटक गया। घर जाने के लिए राजकुमार उठा और अपने सब लोगों के साथ घोड़े पर चढ़ कर रवाना हुआ। इतने में वह लड़की माथे पर दूध का घड़ा रखे, दोनों बगल में दो मेमनों को लिए, उनके सामने से जाने लगी।

राजकुमार के परिवार वालों में से एक को उसे छेड़ने की बात सूझी। उसने लगाम को ढील देकर घोड़े के एँड़ लगाई और लड़की पर उसे कुदा दिया। ऐसा करने में उसका मतलब यह था कि वह घबरा कर इधर-उधर भागेगी और उसके माथे पर से दूध का घड़ा गिर जाएगा, और लोग यह

देख कर हँसेंगे। लेकिन वह लड़की बड़ी होशियार थी। जरा भी घबराए बिना उसने घोड़े के सामने अपने एक मेमने को रख दिया। इस से घोड़ा भड़क उठा और सवार को गिरा दिया। लड़की जरा भी विचलित नहीं हुई, उसके घड़े से दूध की एक बून्द भी नहीं गिरी, और वह अनजान सी बनी मेमनों को हाँकती अपनी राह चली गई।

राजकुमार यह तमाशा देख रहा था उसने उस लड़की को बुला कर पूछा—'कौन हो तुम?'

'मेरा नाम कुरुनदेवी है।' उसने कहा।

'तुम्हारी जाति क्या है?'

'राजपूत'

'तुम्हारा घर कहाँ है?'

'दीख पड़ने वाले उस पुरवे में'

'अपने बाप को एक बार मेरे पास आने कहोगी?' राजकुमार ने कहा।

'बहुत अच्छा'। कह कर वह अपनी राह चली गई। राजकुमार अपने परिजनों के साथ घर पहुँचा। दूसरे दिन राजकुमार के सामने एक बूढ़ा आकर खड़ा हुआ और बोला—'क्या बाबू, मेरी लड़की से खबर भेज कर आपने ही मुझे बुलाया है?'

'हाँ, कुरुनदेवी के पिता आप ही हैं?' राजकुमार ने पूछा। उस बूढ़े के कपड़े फटे-चिटे और मैले-कुचैले थे। यह देख कर ही राजकुमार समझ गया कि यह बहुत गरीब आदमी है। लेकिन वह मूछों पर ताव देता राजकुमार की बगल में ही बैठ गया। और बराबर वालों की तरह बातें करने लगा। राज-परिवार को इस से बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन राजकुमार उस बूढ़े के साहस पर खुश हुआ और बोला—'क्या आप अपनी बेटी को मेरी रानी बनाना मंजूर करेंगे?'

राजकुमार की यह बात सुनते ही राज-परिवार के सब लोग विस्मय में पड़ गए और आपस में कहने लगे—'हमारे राजकुमार का ब्याह इस दरीद्र की बेटी से होगा !' उन लोगों ने सोचा कि अब बूढ़ा तो—'इस से बढ़कर और क्या चाहिए !'—कह कर उछल पड़ेगा। लेकिन बूढ़ा चुप-चाप वैसे ही बैठा रह गया।

राजकुमार ने मुस्कुराते हुए कहा—'मैं मेवाड़ का राजकुमार हूँ, मेरा नाम है युवराज हीरासिंह।' इस पर वह बूढ़ा बोला—'मालूम है, इसीलिए संकोच हो रहा है।' युवराज ने आश्चर्य से पूछा 'संकोच क्यों !'

बूढ़े ने उसका यों जवाब दिया—'हमारी सारी सम्पति है शौर्य और पौरुष इस के सिवा और कुछ भी नहीं।' यह सुन कर राजकुमार बोला—'उस में वह शौर्य सम्पत्ति देख कर ही मैंने उसे अपनी रानी बनाना चाहा है।'

तो फिर मुझे कोई आपत्ति नहीं। लड़की से पूछ कर आपको खबर भेज दूँगा।'

उस दिन जिस बहादुर ने अपना घोड़ा कुदा कर करुनदेवी को छेड़ा था और जो घोड़े से गिर कर खुद हँसी का पात्र बन गया था, वह अपने पास बैठे एक साथी से बोला—'इस बूढ़े का गर्व तो देखो !' उसके साथी ने धीरे से उसे समझाया—आहिस्ता बोलो, राजकुमार ने सुना तो हमारे प्राणों पर आ पड़ेगी ! क्या समझते हो ! यह महाराज का समधी होने जा रहा है !'

हीरासिंह से करुनदेवी की शादी बड़ी धूम-धाम के साथ हो गई। उस वीर रानी के गर्भ से ही बाद में जाकर इतिहास प्रसिद्ध वीर शिरोमणि राणा अमरसिंह का जन्म हुआ !

नाटी लड़की

एक छोटा टापू था। वहाँ के रहने वाले सब नाटे ही नाटे थे। वे लोग ज़मीन से एक बालिश्त ही ऊँचे थे। लेकिन चतुराई में वे अपना सानी नहीं रखते थे। उन्हें जानवरों और पक्षियों की बोलियाँ भी मालूम थीं। जन्तर-मन्तर में भी उनका गहरा विश्वास था।

उस द्वीप वाले बहुत काल से शान्ति-पूर्वक जीवन बिताते आ रहे थे। कुछ दिनों के बाद उन पर आपत्ति आ पड़ी! दुनियाँ के दूसरे लोग उस द्वीप को देखने आए। उन्हें देख कर ये लोग बहुत डर गए। फ़ौरन उन्होंने यह तय किया कि जहाँ कोई आदमी नज़र में न पड़े हम वहाँ चले जाएँ।

सो वे लोग जब माल-असबाब ठीक करके गाय-बैलों के साथ सपरिवार तैयार हुए, तो ब्रह्मचारी 'बेंकय्या' की बात याद आ गई। सब लोग चल पड़े थे। लेकिन बेंकय्या वहाँ से न टसकने की भीष्म-प्रतिज्ञा करके बैठा रह गया।

'बेंकय्या बाबू! अकेले रह जाओगे, ये स्वार्थी और दुष्ट लोग तुम्हारी बलि दे देंगे!' उसके बन्धु-बांधव और दोस्त-मित्रों ने उसे खूब समझाया-बुझाया। उसको रोज खाना खिलाने वाली उसकी दादी ने भी उस से बहुत कुछ कहा-सुना, लेकिन बेंकय्या ने किसी की नहीं सुनी! और दृढ़ता से वह बोला— 'चाहे, जो कुछ हो! अपनी बाग-बाड़ी छोड़ मैं कहीं नहीं जाऊँगा! अगर मेरी ज़बान ठीक रही, तो कोई मेरा क्या बिगाड़ सकेगा?'

इस तरह जब उसके दोस्त-मित्र जाने लगे, तो एक-एक कर बेंकय्या के पास आए और विदा लेने लगे— 'तो हम जाते हैं!'

उसके जवाब में वह कहता—'अच्छा! बहुत अच्छा !!'

उस द्वीप में एक आदमी भी नहीं रह गया। सब के सब चले गए! यह देख कर वेंकय्या को कुछ भी नहीं सूझा। एक बड़ी शून्यता उसके सामने खड़ी हो गई। जब उसे कुछ न सूझा, तो वह बाग में जाकर काम करने लगा और साँझ होने पर घर आया। वह सोच रहा था कि रोज की तरह घर आने पर उसे खाना तैयार मिलेगा!

मगर घर आकर देखता है, तो भोजन नदारद! खाली बर्तन पड़े ठन-ठना रहे थे। उसकी समझ में कुछ न आया। सोने के कमरे में गया—बिछौने सब अस्त-व्यस्त पड़े हुए थे।

इस तरह काम नहीं चलेगा—यह सोच कर उसने रसोई बनानी चाही और चावल धो कर चूल्हे पर चढ़ा दिए। भोजन तैयार होने में काफी देर लगेगी, अभी आए जाता हूँ, यह सोच कर वह फिर से बाग में चला गया। जब तक वह लौटे-लौटे, चूल्हे पर का भात जल भुन कर खाक हो गया।

वेंकय्या को भूख बर्दाश्त नहीं हुई! उसकी जान निकलने लगी! थोड़ा सा पानी पीकर वह लेट गया। उसने मन-ही-मन सोचा—'ऐसे तो काम चलने का नहीं, कल से—देखो! मैं क्या करता हूँ!' सोचा तो, पर रसोई नहीं हो सकी। दूसरे दिन से वह फल-मूल खा दिन काटने लगा। एक बार खाना बनाने चला, तो ठन-मना कर हण्डिया फूट गई। इन सब बातों से वेंकय्या ऊब गया। अध-पेट रह कर वह भला बाग-बाड़ी का काम कैसे करता!

एक दिन वह उदास भाव से बैठा था, कि सामने के उगे पौधे में दो तारे चमकते दीख पड़े। वह विस्मित हो उठा। गौर से देखने पर उसे मालूम हुआ कि गिलहरी की

आँखें चमक रही हैं। गिलहरी बाहर आई और बोली—'भाई बेला! उदास क्यों हो रहे हो?' इस पर 'बेलय्या' ने जवाब दिया— क्या कहूँ गिलहरी रानी! जब मेरे लोग मेरे सामने थे, मैंने उनकी कीमत नहीं जानी थी। अब जाना कि अपने लोग क्या होते हैं!

'बिला बाबू! कब तक इस तरह रहोगे? कहीं से एक सुन्दर लड़की ले आकर गले में बाँध लो।' गिलहरी ने कहा।

गिलहरी ने जब यह बात कही, तो 'बिला' को मन-ही-मन अपने लोगों की बातें याद आ गईं—'अरे 'बिला!' तू अकेला यहाँ घर-बारी बन जाए तो हम देखें।' उस समय 'बेलय्या' ने उनसे कहा था—'मर जाऊँगा, पर ब्याह नहीं करूँगा! ब्याह एक बड़ी बला है।'

बिला जब इस तरह पहली बातें याद कर रहा था, तो गिलहरी का बेटा फुदकता हुआ वहाँ आया और कहने लगा—'माँ! माँ! पेड़ के नीचे कोई औरत गिर पड़ी है! जल्दी चल कर देखो तो सही कि कौन है वह!'

तीनों वहाँ से चल पड़े। वहाँ फूलों के पौधों के नीचे एक छोटी बालिका पड़ी हुई थी। उसका मुँह बेले के फूल के समान सफेद था। उसके कोमल गाल गुलाब के फूल की तरह खिल रहे थे।

गिलहरी बोली—'जाने बेचारी क्यों पड़ी हुई है! इसे यहाँ कैसे छोड़ दिया जाय!'

गिलहरी का बेटा उस लड़की को जगाने चला, लेकिन उससे कुछ न हो सका। तब चेलय्या ने जाकर उसे गोद में उठा लिया फिर सब मिल कर चिन्ना के घर आए, और उसे चटाई पर बिठा दिया। गिलहरी ने चिन्ता से कहा—'इस लड़की में प्राण नहीं मालूम होते!' उसकी साँस चलती है या नहीं—यह देखने के लिए चिन्ना ने उसकी नाक पर उँगली रखी। आखिर गिलहरी बोली—'चिन्ना बाबू! यह सच-मुच की लड़की नहीं है! आदमी की मूरत है! कोई भूल से यहाँ छोड़ गया है!'

चिन्ना ने उस सुन्दर मूर्ति की जाँच-पड़ताल शुरू कर दी। लजाते-लजाते उसने उसके गाल मल दिए, रेशम की तरह मुलायम उसके कान्तिमान सिर को सहलाया, फिर प्रश्न किया—'लड़की, तेरा नाम क्या है?' आखिर चिल्ला उठा—'अरे! यह तो मूरत है।'

दीन-नेत्रों से देखते हुए उसने कहा—'गिलहरी! यंत्र-मंत्र द्वारा इस मूरत को आदमी बना दे, ऐसा कोई महात्मा है क्या? सच-मुच अगर यह मूरत आदमी बन जाय तो कितने प्यार से इसे 'रानी' कह कर पुकारूँ!' गिलहरी ने खुश होकर कहा—'तुम सच कह रहे हो। चिन्ना बाबू! लेकिन जरा ठहरो, मैं सोच कर बताती हूँ!' फिर कुछ सोच कर उसने कहा—'मेरे साथ आओ!' यों दोनों चले जा रहे थे कि साँझ हो गई। उस अँधेरे में एक बड़ा डरावना सिर उनके सामने आया और बोला—'अरे ठहर जाओ! अभी एक बड़ा तूफान आने वाला है। देखो! मेरे पाँव में ठण्डी हवा लग रही है! जरूर आँधी-पानी आएगा।

यह सुन कर बिल्ला गिड़-गिड़ा कर कहने लगा—'अजी! फूलों की क्यारी में हमें एक सुन्दर मूरत मिली है! कृपा करके यह बताओ तो सही कि कोई उसे आदमी बना सकता है? तुमको बहुत पुण्य होगा।'

यह सुन कर वह डरावना सिर कहने लगा—'तुम सीधे यहाँ से चार योजन दूर पर रहने वाले गूनी बाबू के पास चले जाओ। वह तुम्हारी इच्छा पूरी कर देगा!'

गिलहरी और बिल्ला मूरत को उठा कर दोनों चल पड़े और पेड़ के खोखले में रहने वाले गूनी बाबू के पास जा पहुँचे। बिल्ला ने मूरत की बात उसे बताई, और उसमें प्राण डाल देने की प्रार्थना की।

यह सुन कर गूनी बाबू बोले—'अरे, यह क्या! तुम लोग इस मूरत में जान डालने की बात कह रहे हो! तुम्हें मालूम नहीं, यहाँ से दस योजन की दूरी पर कीका-वन में एक बड़ा भूत रहता है! वह भूत एक लड़की को पाल रहा है। यह मूरत उस लड़की का खिलौना है—समझे? अगर भूत को यह बात मालूम हुई, तो तुम लोगों को कच्चा ही चबा जाएगा—जहाँ से इसे उठा लाए हो, रख आओ इसे वहीं!'

'किसी की भी रहे, मैं यह मूरत छोड़ने वाला नहीं, गूनी बाबू! आप इसमें प्राण डालने का उपाय बता दें मुझे!' चित्रा ने कहा।

तब गूनी बाबू बोले— मूरत में जान डालने का गुर भी उसी भूत को मालूम है!'

उसके लिए वह भूत क्या लेगा!'— चित्रा ने फिर पूछा।

'उसे धन की क्या कमी है! हजार कहने-सुनने पर भी वह कुछ नहीं लेगा। ख्याल में चढ़ गया, तो भलाई कर देगा। उसके हाथ से भलाई पाने का सौभाग्य में होना चाहिए!' इतना कह कर उसने जिस जङ्गल में भूत रहता था, उस जङ्गल का मार्ग बता दिया।

'बहुत अच्छा!' कह कर और विदा लेकर 'चित्रा' जब जाने लगा तो, गूनी बाबू ने उसे पुकारा और उसके कानों में कहा— 'बाबू, तुम्हें एक भेद की बात बता देता हूं, याद रखो, वह लड़की भूत को प्राणों के समान प्यारी है। लड़की की चिन्ता ही, उसकी चिन्ता है। इस लिए अगर तुम कोई ऐसा अद्भुत काम करो, जिस से वह लड़की खुश हो जाए, तो फिर वह भूत बड़े प्रेम से तुम्हारी इच्छा पूरी कर देगा।'

यह सुन कर 'चित्रा' हतोत्साह हो गया। गिलहरी और गिलहरी का बेटा भी 'चित्रा' की चिन्ता दूर न कर सके। कौन सा अद्भुत काम किया जाए, जिस से वह भूत खुश हो, इस की चिन्ता में वह डूबा रहने लगा।

ऐसे ही समय, उस द्वीप में आने वाले कुछ नये लोग वहां घूम-घाम कर देखने-सुनने लगे। देख सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुए। लेकिन इस द्वीप में कोई भी आदमी नहीं है, यह देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ।

आखिर-कार एक पेड़ के नीचे उदास बैठा चित्रा उन्हें दीख पड़ा। उस की

विचित्र शकल-सूरत देख कर वे लोग अचरज में पड़ गए। बात-चीत में उन्हों ने 'बिन्ना' को पकड़ लिया और चिन्ता का कारण भी जान लिया। सब कुछ मालूम हो जाने पर वे लोग बोले—'अरे, इसी के लिए इतनी चिन्ता!!' कहते हुए उन्हों ने उसे बहुत ढाढ़स दिया। फिर उसे समुद्र-तट पर ले गए और जहाज पर ले जाकर बहुत सी अद्भुत चीजें उसे दिखाईं।

उन में जो चीज उसे बहुत ज्यादा अद्भुत मालूम हुई, बड़ी आतुरता से उसे उसने माँगा, और उन लोग ने उसे वह चीज दे भी दी। वह चीज लेकर बिन्ना गिल्हरी के साथ मूरत को बगल में दबा कर, जल्दी-जल्दी कदम रखता सीधे भूत के घर की ओर चल पड़ा। बहुत से कष्ट झेलते हुए तीनों उस कीका-वन में पहुँचे। भूत का घर पास आया, तो दो सिर वाले दो कुत्ते उन पर टूट पड़े! बिन्ना ने एक पटाखा उन पर छोड़ दिया। ऐसी आवाज़ उन्होंने कभी नहीं सुनी थी, इसलिए दोनों कुत्ते सिर पर पैर रख कर भाग खड़े हुए और आँखों के ओझल हो गए। आवाज को सुन कर भूत और उसकी बेटी दोनों बाहर आए—बिन्ना के हाथ में मूरत देख कर दोनों का पारा चढ़ गया! उन्होंने उसे छीन लेना चाहा। लेकिन बिन्ना ने फुलझड़ी जला दी! उसकी चका-चौंध में वे लोग कुछ भी नहीं देख सके! इतने में बिन्ना ने छुड़छुड़ी भी छोड़ दी। वह सनसनाती आसमान की ओर उड़ी, जिसे देख कर वे लोग अचम्भे में पड़ गए! फिर बिन्ना ने अनार-फूल जला दिया। जिससे सहसा जग-मगाते हजारों फूल बरस पड़े! उन फूलों को देख कर लड़की को बेहद खुशी हुई। सिर्फ बेटी ही नहीं, वह भूत भी अत्यन्त हर्षित हुआ।

बिल्ला को पास बुला कर उन्होंने उससे मूरत माँगी और कहा—'तुमको जो कुछ चाहिए, माँग लो!' बिल्ला ने अपनी बात कह सुनाई। वह मूरत बेटी को बहुत प्यारी थी, इसलिए भूत कुछ सोच में पड़ गया।

भूत की बेटी नाटी थी। इसलिए उसको अब तक कोई लायक वर नहीं मिल सका था! आज इस बिल्ला को देखते ही बेटी के लायक वर मिल गया— ऐसा सोच कर भूत मन-ही-मन फूला न समाया!

उसने बिल्ला के साथ अपनी बेटी की शादी धूम-धाम से कर दी! फिर मूरत में जान डाल कर उसे भी दामाद को दहेज में दे दिया! सब लोग फिर द्वीप में आ गए, जहाँ बिल्ला रहता था!

उस द्वीप को जो लोग देखने आए थे, उन लोगों ने जाते-जाते बिल्ला और उस नाटी लड़की को आशीर्वाद देकर नज़र नज़राने भेंट किए।

उस दिन डर कर जो बौने भाग गए थे, धीरे-धीरे वे सब फिर लौटने लगे। बिल्ला अब एक घर-बारी हो गया था। यह देख कर सबों को बड़ी खुशी हुई। उसकी आतिशबाजियों के खेल देख कर तो उनके अचरज की हद ही नहीं रह गई।

'मुझे एक!-मुझे एक!!'—कहते हुए सब लोग उसे घेर कर खड़े हो गए!

'क्या है यह सब! 'मुझे एक!'—'मुझे एक!!' कितनी बार जगाऊँ तुझे! उठ,—उठ! तेल-स्नान करना है न!' माँ की पुकार सुन कर लड़का उछल पड़ा!

शेख फरीद

पुराने समय में श्रीपति नाम का एक भक्त रहता था। उसने समस्त शास्त्रों का अभ्यास किया था, वह साधु श्रेष्ठ था। उसकी पत्नी का नाम था श्यामला। श्यामला पतिप्राणा और पतिव्रता स्त्री थी। उसके चरित्र और गुणों की सभी तारीफ़ करते थे।

साधु-चरित्र वाले उस दम्पति को भगवान की दया से, एक पुत्र पैदा हुआ। उसका नाम, लौकिक रूप से, शेख फरीद रखा गया। और वह लाड़-प्यार से पाला-पोसा गया।

एक दिन देवार्चन के लिए फूल लाने श्रीपति जङ्गल को गया। वहाँ फूल तोड़ते हुए एक बड़े जहरीले साँप ने उसे डस लिया। श्रीपति झट-पट घर आया, स्नान किया और भगवान का ध्यान धर कर तुलसी दल लिया। फिर पत्नी को बुला कर जो कुछ हुआ था, सब कह सुनाया; और ज्ञान-उपदेश किया। उसके बाद अपने तीन साल के बच्चे को गोद में लेकर आशीर्वाद दिया और भगवान के ध्यान में लीन हो गया! 'विधी का विधान टूट तो नहीं सकता!' यह सोच कर श्यामला ने अपने दुख को अपने अन्दर ही दबा लिया; और बड़ी सावधानी से पाँच साल तक अपने बच्चे का लालन-पालन किया।

शेख फरीद हरि-नाम-सङ्कीर्तन में भाग लेने लगा। एक दिन वह बाल-भक्त अपनी माँ के पास आया और पूछने लगा—'माँ सब लोग अनेक प्रकार से भगवान की बड़ाई करते हैं। लेकिन मुझे वह क्यों नहीं दीख पड़ते हैं?' इस पर उसकी माँ ने जवाब दिया—'हाँ, वत्स! बड़ों का कहना है कि जो तपस्या करता है, उसी को भगवान दर्शन देते हैं!'

सुरेन्द्र कुमार

गया। और आते ही उसके पैरों पर गिर पड़ा—"महात्मा! मेरे शकर के सब बोरे बालू के बोरे हो गए! आप से मैंने जो छल किया, उसकी मुनासिब सज़ा मुझे मिल गई। अब मेरी गलती माफ़ कर दीजिए!' यों कह कर वह गिड़-गिड़ाने लगा। यह सुन कर फरीद बोला—'भाई! मैं कुछ भी नहीं जानता। मैंने कुछ भी नहीं किया!' लेकिन व्यापारी को कुछ भी विश्वास न हुआ।

इस पर फरीद ने उस व्यापारी से कहा—'अरे, भाई! अगर मेरी बात से सच-मुच तुम्हारी शकर बालू में बदल गई हो तो मैं फिर कहता हूँ कि अब भगवान की कृपा से वह चीनी में बदल जाय!' ऐसा कहते ही बालू भरे हुए बोरे सब-के-सब चीनी में बदल गए! यह देख कर व्यापारी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा!

इसके बाद शेख फरीद ने फिर से नेम-नियम के साथ कठिन तपस्या शुरू कर दी। फिर भी भगवान ने उसको दर्शन नहीं दिए। यह देख कर फरीद को बहुत दुख हुआ। और वह घर लौट कर बड़ी निराशा से माता के सामने रोने लगा। माँ श्यामला को सारी बातें मालूम हुईं। उसने पुत्र का

सिर सहलाते हुए उसकी जटा से एक लट खींच ली। यह देख कर फरीद बोला—'माँ! मैं तो अधमरा हो ही गया हूँ, इस पर तुम मुझे यह क्या कष्ट दे रही हो!'

यह सुन कर माता बोली—'पुत्र! एक छोटी-सी लट खींचने में जब तुमको ऐसा दुख हो रहा है, तो तुमने कभी यह सोचा कि जब अपनी भूख मिटाने के लिए पेड़ों से, पत्ते तोड़ते होंगे तो उन्हें कितना दुख होता होगा? इसलिए तुम्हारी तपस्या हिंसा से भरी हुई थी! तपस्या करते समय तुम्हारे मन में रोटी और शकर की रुचि भी बनी ही रही।

ऐसी हालत में भगवान तुम पर कैसे प्रसन्न होते!' यह सुनते ही फरीद फौरन उठा और माँ के उपदेशानुसार निश्चल मन से तपस्या करने लगा। वह ऐसा निश्चल हुआ कि हिलना-डुलना भी उसका बन्द हो गया। गरमी में तपता रहा, वर्षा में भीगता रहा, जाड़े में ठिठुरता रहा और सूख कर काठ बन गया। फिर भी अपने आसन पर जमा रहा।

यह देख कर भगवान प्रत्यक्ष हुए, और दया-दृष्टि से देखते हुए बोले—'बस! अब तुम घर चले जाओ, और सब गुरुओं के आश्रय में रह कर उनका अनुग्रह प्राप्त करो, मैं सदा तुम्हारे पास ही रहूँगा।' ऐसा कह कर भगवान अंतर्धान हो गए।

शेख फरीद फौरन घर चला आया, और जो कुछ हुआ था, उस ने सब माता को सुना दिया। माँ को बहुत खुशी हुई। तदुपरान्त शेख फरीद घर से निकला और द्वारका इत्यादि तीर्थ-क्षेत्रों में घूमता, भगवान के भक्तों का तीव्र दर्शन करता, घर लौटा और माँ के साथ सुख-पूर्वक रहने लगा।

एक दिन उस देश का राजा उसके घर आया और पूर्व-जन्म के पाप के फल स्वरूप उसे जो एक बीमारी हो गई थी। उसे दूर कर देने की फरीद से प्रार्थना करने लगा। फरीद के सिर से पैर तक अपना हाथ फेरते ही राजा एकदम चङ्गा हो गया।

इस पर राजा ने धन-संपत्ति से शेख फरीद का सत्कार करना चाहा, और फरीद के पास जाकर बोला—'अगर आप यह सब स्वीकार नहीं करेंगे तो मैं यहीं प्राण त्याग दूँगा!' उसी रात को भगवान पांडुरंग ने स्वप्न में फरीद को दर्शन दिए। फिर आज्ञा की कि राजा जो धन-दौलत दे रहा है उसे मंजूर कर लो और उस से भगवान के भक्तों की सेवा करो।

प्रकृति के दीपक

हमारे पर्व-त्योहारों में मुख्य बात होती है ज्योति-आराधना । इस लिए इन सब कामों में दीपक अवश्य जलाए जाते हैं । ज्योति जीवन के लिए आराध्य मानी जाती है । इस बात को प्रमाणित करने के लिए प्रकृति में अनेक विचित्र वस्तुएँ पाई जाती हैं ।

उन में से हमारी जानी-पहचानी चीज है जुगनू । अंधेरी रात में, यह जुगनू सितारों की तरह चमकते रहते हैं । इन्हें ही कुछ पक्षी पकड़कर अपने घोंसलों में ले जाते हैं, और इन से दीपक की तरह काम लेते हैं । इसी तरह का एक कस्तूरी कीड़ा होता है । देखने में बहुत सुन्दर होता है । इसकी सारी देह से जग-मगाती रोशनी आती है । इसके बारे में ही कहा जाता है कि तीन या चार कीड़ों को पकड़ कर कांच की नली में डाल दें, तो उन से जो रोशनी होगी, उस में बैठ करके कोई भी एक पुस्तक पढ़ सकता है ।

और सहज प्रकाश देने वाले कुछ जल-चर जीव भी होते हैं । 'इस्टामियस बोना' और 'सियो-नियस' यह दो प्रकार की प्रकाश देने वाली मछलियां होती हैं । उन की देह में गोल-गोल कुछ छेद दीख पड़ते हैं । उन्हीं से लालटेन से मिलने वाली रोशनी आती रहती है । यह मछलियाँ समुद्र के गर्भ में रहती हैं । और वहां के प्रदेश में आकाश फैलाती रहती हैं । 'जड़ी' नाम की एक मछली होती है । इसके सिर पर दीपक की तरह प्रकाश देने वाली एक वस्तु होती है ।

जब नैसर्गिक प्राणियों में प्रकाश की इतनी प्रधानता पाई जाती है, तो बुद्धिमान मानवों के दीपाराधन वाले पर्व-त्योहारों में आश्चर्य क्या !

एक किसान के तीन लड़के थे। बड़े दो खूब फुर्तीले थे। तीसरा मोटी अक्ल वाला था। वह हमेशा नखें नोचता रहता था।

एक दिन किसान ने अपने लड़कों को खेत बोने के लिए बुलाया। बड़े दोनों जाकर खेत बो आए। छोटा नखें नोचता हुआ घर पर ही रह गया। कुछ दिनों के बाद बीज अंकुरित हुआ और पनपने लगा। एक दिन किसान ने खेत में जाकर देखा तो बीज के पौधे सब नष्ट हो गए थे! कोई जानवर खेत को रौंद गया था। किसान जल भुन गया। उसने अपने लड़कों को फिर बुला कर खेत जोतने और उसकी रखवाली करने की हिदायत कर दी।

दोनों बड़े लड़कों ने जाकर खेत फिर बो दिया। पौधे फिर से उग आए। एक रात को बड़ा लड़का रखवाली करने आया। वह बहुत देर तक जागा रहा, लेकिन न जाने किस समय उसकी आँखें झपक गईं, और वह गाढ़ी नींद में सो गया। सवेरा होने पर जब वह उठा तो देखता क्या है कि सारा खेत रौंदा हुआ पड़ा है! और सब पौधे तहस-नहस हो गए हैं।

बड़े दोनों लड़कोंने फिर से खेत बोया। फसल तैयार होने पर दूसरा लड़का रखवाली करने लगा। वह भी एक रात सो गया। सवेरा होने पर खेत की वही हालत हो गई।

इस बार खेत की रखवाली करने की बारी उस बेवकूफ लड़के की थी। उसने खेत में ही सोने का इन्तजाम किया। पेड़ों से कुछ टहनियाँ काटीं और बिछौना सजाया। और उसी पर आँखें बन्द कर लेट रहा। टहनियाँ

कांटे की तरह चुभने लगीं, इसलिए उसे नींद नहीं आई। बिछौना ठीक करने के लिए उठा, तो देखता क्या है कि एक घोड़ा खेत में चर रहा है। 'अरे तू ही मेरे खेत को चौपट कर रहा है! अच्छा देख, तुझे कैसा पाठ पढ़ाता हूँ।' कहता हुआ वह बेवकूफ़ लड़का उठा और चुप-चाप पीछे से जाकर उसके ऊपर कूद पड़ा। इतने में घोड़ा आसमान की ओर उड़ा, लेकिन बेवकूफ़ के हाथ में उसकी पूँछ लगी, उसे उसने खूब मजबूती से पकड़ लिया। किसी भी तरह छोड़ा नहीं।

घोड़ा हवा में उड़ता-उड़ता तीन समुद्र के पार जाकर जमीन पर उतरा और बोला— 'मेरी पूँछ छोड़ दो, अब मैं कभी तुम्हारे खेत में नहीं फटकूँगा।'

'मुझे तुम पर विश्वास नहीं; तुम ने हमारा बड़ा नुकसान किया है। इसका जवाब तुम्हारे पास क्या है?' उस बेवकूफ़ ने पूछा।

'उस नुकसान के बदले में तुम्हें अपने बच्चे देता रहूँगा।' घोड़े ने कहा।

'पहले मुझे घर पहुँचा दो, फिर बताऊँगा।' बेवकूफ़ने ने कहा। उस घोड़े ने उसे अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और उसके घर पर ले जाकर उतार दिया।

उस बेवकूफ़ ने सारी बातें अपने बाप से नहीं कहीं।

फिर बेवकूफ़ ने जङ्गल जाकर लकड़ियाँ काटीं। और घोड़े के बछेड़ों के लिए घर बनाना शुरू कर दिया। इस बार खेत को आबाद देख कर किसान को बड़ी खुशी हुई। घुड़साल तैयार होते ही तीनों बछेड़े वहाँ आ खड़े हुए। उन में दो बछेड़े बहुत खूबसूरत थे। उनके सुम चाँदी के थे। और उनके बदन सुनहले थे। तीसरे बछेड़े की पीठ पर दो कूबड़ थे। उन कूबड़ों के बीच, बिना जीन के ही बैठ कर सवारी कर

सकते थे। इसीलिए वह बेवकूफ़ उसे बहुत प्यार करता था।

छोटा भाई कहीं से घोड़े उड़ा लाया है। यह देख कर दोनों बड़े भाइयों ने सोचा—'अगर यह घोड़े राजा के हाथ बेच दिए जाएँ तो खूब पैसे आएँ।' अपनी यह राय उन दोनों ने उस बेवकूफ़ से कही। बेवकूफ़ ने उनकी बात मान ली। और तीनों घोड़ों पर सवार होकर राजा के पास गए।

सुनहले घोड़ों को देख कर राजा अचम्भे में आ गया, और बोला—'बच्चो! इन घोड़ों का दाम क्या है?' इस के जवाब में बेवकूफ़ ने कहा—'इन के दाम आँके नहीं जा सकते, ये अनमोल हैं। आप की जो इच्छा हो दे दीजिए।' उन घोड़ों को देखते ही साईस ने कहा—'अरे! इतने बड़े-बड़े घोड़ों की देह कौन मलेगा! यह मुझसे नहीं होगा। जो लाया है उसी को संभालने भी कहिए।' बेवकूफ़ बहुत खुश हुआ। उसने कहा—'अगर मुझे भी यहीं रहना है तो राजा ये घोड़े यों ही ले लें।'

राजा और भी खुश हुआ। फिर बेवकूफ़ के भाइयों को कुछ धन दे कर वापस भेज दिया।

बेवकूफ़ जब इस तरह राज-महल में रहने लगा, तो एक दिन राजा ने उसे बुला कर कहा—'तुम बड़े बलवान मालूम होते हो। मैं सागर की राजकुमारी से ब्याह करना चाहता हूँ। तुम को जाकर उसे लाना होगा।'

यह सुन कर बेवकूफ़ हीला-हवाला करने लगा। सागर-राजा कौन है? उसकी बेटी कहाँ रहती है, यह मुझे कैसे मालूम हो?'

राजा को गुस्सा आ गया। उसने कहा—'अगर तुम यह काम पूरा न करोगे, तो देखो, यह तलवार, खोपड़ी उड़ जाएगी! खबरदार!! बेवकूफ़ चिन्ता में पड़ गया और अपने कुबड़े घोड़े के पास जाकर अपना दुखड़ा रोने लगा।

घोड़े ने कहा—'यह कौन सी बड़ी बात है! सागर-राजकुमारी को भेंट देने के लिए कुछ अपूर्व जल-पान राजा से माँग लो। फिर जो करना होगा, पीछे बताऊँगा।'

उसी प्रकार राजा से अपूर्व जल-पान लेकर बेवकूफ़ अपने कुबड़े घोड़े पर सवार हो गया। घोड़ा आसमान में उड़ा। तीनों समुद्र पार कर साँझ के समय चौथे समुद्र के तट पर जा उतरा।

वहाँ मूढ़मति ने तम्बू तान लिया। और जल-पान की तयारी करके सागर-राजकुमारी की बाट जोहने लगा। कुछ देर बाद समुद्र उमड़ा और आसमान को छूने वाली बड़ी-बड़ी लहरें उठीं! उन्हीं लहरों पर चढ़ कर सागर-राजकुमारी किनारे पहुची। वहाँ उसने तम्बू तना हुआ देखा, जल-पान की खुशबू उसकी नाकों में पहुँची, वह तम्बू में प्रवेश करके इच्छानुसार खाने लगी। सचमुच वहाँ के ये पदार्थ उसे बहुत प्रिय लगे!

अब तक वह बेवकूफ़ आड़ में छिपा-छिपा देख रहा था। चुप-चाप पीछे से आकर उसने उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी, और फिर उसे झट-पट उठा कर घोड़े पर चढ़ा लिया और आसमान की ओर उड़ चला।

सागर की राजकुमारी को देख कर राजा बहुत खुश हुआ और उससे ब्याह करने की इच्छा प्रगट की।

'बहुत अच्छा! मुझे मन्जूर है। लेकिन मेरा एक व्रत है, पहले जो मुझे लेकर आया है, वह खौलते दूध में नहलाया जाय!' राजकुमारी ने कहा।

'यह कौन सी बड़ी बात है!' राजा ने कहा।' फिर बेवकूफ़ को बुला कर उसने उसे दूध में स्नान करने की आज्ञा दी। वह बेवकूफ़ फिर अपने कुबड़े घोड़े के पास जाकर अपना रोना रोने लगा।

घोड़े ने कहा—'यह कौन सी बड़ी बात है! सागर-राजकुमारी को भेंट देने के लिए कुछ अपूर्व जल-पान राजा से माँग लो। फिर जो करना होगा, पीछे बताऊँगा।'

उसी प्रकार राजा से अपूर्व जल-पान लेकर बेवकूफ अपने कुबड़े घोड़े पर सवार हो गया। घोड़ा आसमान में उड़ा। तीनों समुद्र पार कर साँझ के समय चौथे समुद्र के तट पर जा उतरा।

वहाँ मूढ़मति ने तम्बू तान लिया। और जल-पान की तयारी करके सागर-राजकुमारी की बाट जोहने लगा। कुछ देर बाद समुद्र उमड़ा और आसमान को छूने वाली बड़ी-बड़ी लहरें उठीं! उन्हीं लहरों पर चढ़ कर सागर-राजकुमारी किनारे पहुंची। वहाँ उसने तम्बू तना हुआ देखा, जल-पान की खुशबू उसकी नाकों में पहुँची, वह तम्बू में प्रवेश करके इच्छानुसार खाने लगी। सचमुच वहाँ के ये पदार्थ उसे बहुत प्रिय लगे!

अब तक वह बेवकूफ आड़ में छिपा-छिपा देख रहा था। चुप-चाप पीछे से आकर उसने उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी, और फिर उसे झट-पट उठा कर घोड़े पर चढ़ा लिया और आसमान की ओर उड़ चला।

सागर की राजकुमारी को देख कर राजा बहुत खुश हुआ और उससे ब्याह करने की इच्छा प्रगट की।

'बहुत अच्छा! मुझे मन्जूर है। लेकिन मेरा एक व्रत है, पहले जो मुझे लेकर आया है, वह खौलते दूध में नहलाया जाय!' राजकुमारी ने कहा।

'यह कौन सी बड़ी बात है!' राजा ने कहा।' फिर बेवकूफ को बुला कर उसने उसे दूध में स्नान करने की आज्ञा दी। वह बेवकूफ फिर अपने कुबड़े घोड़े के पास आकर अपना रोना रोने लगा।

रहा, आखिर वह चन्द्र-मण्डल में पहुँचा। सागर की राजकुमारी के भाई से मिला, और उसकी शादी की पोशाक लेकर सीधे राजा के पास पहुँचा।

'बहुत अच्छा! अब मेरे लिए कोई अड़चन नहीं रह गई। अब हम शादी के लिए तैयार हो जायँ! लेकिन मेरे कुलाचार के अनुसार शादी के पहले तुम को भी खौलते दूध में नहाना होगा!' राजकुमारी ने कहा।

'मैं!' राजा ने घबरा कर पूछा।

'चुटकी बजाते जो काम इस बेवकूफ़ ने किया था, क्या आप नहीं कर सकते!' सागर राजकुमारी ने व्यङ्ग किया।

राजा का पौरुष जागा। फौरन उसने दूध गरम करवाया! जब वह दूध खौलने लगा तो राजा ने उँगली डाल कर देखा, उँगली डालते ही वह सी-सी करने लगा! यह देख कर राजकुमारी कहने लगी—'क्या इस बेवकूफ़ ने भी तुम्हारी तरह सी-सी की थी? उसने तो आँच और भी तेज करवाली थी और हँसते हुए स्नान किया था!'

राजा का पौरुष भभक उठा, सीढ़ी मँगवा कर कड़ाह पर चढ़ा और धम्म से उसमें कूद पड़ा! अब क्या था! राजा का काम तमाम हो गया!!

यह देख कर सागर राजकुमारी ने उस बेवकूफ़ से विवाह करने की इच्छा प्रगट की। उसी मुहूर्त में बेवकूफ़ विवाह की तैयारी करने लगा। बड़ी धूम-धाम से दोनों की शादी हो गई।

फिर वह बेवकूफ़ ही उस देश का राजा हो गया। उसके शासन में देश की प्रजा सुख से रहने लगी। लेकिन प्रजा अपने राजा को बेवकूफ़ कह कर नहीं पुकार सकी!

नौ की करामात

(१) तुम अपने किसी दोस्त की इच्छानुसार एक अंक सोच लेने को कहो—फिर उसे ९ से गुणा करने को कहो। फिर गुणा करने से जो मिले, उस में उसे अपने सोचे हुए अंक को मिला देने को कहो। जो मिलाने से जितना आवे वह सब उसे बताने को कहो। अब तुम्हारे मित्र ने जो अंक मन में रख लिया था, तुम उसे चुटकी बजाते बता सकोगे। वह कैसे होगा सोही देख लो। सोच लो तुम्हारे मित्र ने मन में रखा .... 73 उसे

9 गुणा करो	9
	657
इसमें 73 जोड़ो	73
	730 कुल

अब इस समस्त योग में कम करके बच गया तुम्हारे मित्र का सोचा हुआ अंक अर्थात—
73—(0)—2 = 73 यह तुम निश्चय पूर्वक कह सकते हो।

नै के संबन्ध में भाग देने का एक विचित्र ढंग.

म. ग. रा. उदयपुर.

	भाग फल	अवशेष		भागफल	उवशेष
(२) $10 \div 9 =$	1	1	$50 \div 9 =$	5	5
$20 \div 9 =$	2	2	$60 \div 9 =$	6	6
$30 \div 9 =$	3	3	$70 \div 9 =$	7	7
$40 \div 9 =$	4	4	$80 \div 9 =$	8	8

ऐस. के. आर. पेनुकुण्डा.

(३) तीन वाली कोई संख्या को लो पहला अंक आखिर के अंक से ज्यादा होना चाहिए। तुम ने जो संख्या ली थी उसे उलट कर पहली संख्या में से निकाल डालो। अब जो बाकी बचे शेष में पहला अंक और आखरी अंक जोड़ दो ९ आ जाएगा बीच का अंक भी नौ होगा इस के दो उदहारण लो।

895	747
598	647
297	099

बीच की संख्या भी 9. शून्य का कोई मूल्य नहीं इस लिए आखरी संख्या 9—

एन. जी. सेलम.

उस समय महान पराक्रमी राणा प्रतापसिंह का शासन काल था। अकबर बादशाह भारत के सम्राट थे। सभी सामन्त राज्य सम्राट अधीन हो गए थे। लेकिन राणा प्रताप ही सिर नहीं झुका रहे थे! अकबर गुस्से से भर गया था। राणा अपनी टेक पर डटे रह गए।

राणा प्रताप का यह स्वातन्त्य-प्रेम अकबर से सहन न हुआ। वह उन्हें अनेक तरह से सताने लगा। फिर भी राणा विचलित न हुए! सम्राट बिगड़ पड़ा। उसने निश्चय किया—'चाहे जिस तरह हो, राणा को बस में लाना ही होगा!' सम्राट की प्रति-हिंसा से राणा के हृदय में धक-धक जलती हुई स्वतन्त्रता की ज्वाला और भी भड़क उठी! आखिर सम्राट के दबाव के कारण महाराणा को जङ्गलों में जाकर रहना पड़ा!

अगर राणा अकेले होते तो उन्हें कोई चिन्ता न होती! उनकी पत्नी और दुलारे बच्चे भी कष्ट भोग रहे थे! अब राणा के सामने यह समस्या खड़ी हुई—'महत्वाकांक्षी सम्राट के अधीन गुलामी की जिन्दगी बिताई जाय, या जङ्गलों में भटकते हुए स्वतंत्रता की हवा में साँस ली जाए....!' उन्होंने दूसरा रास्ता ही पसन्द किया! सिर्फ राणा को ही नहीं, उनकी पत्नी सुगुणा, ग्यारह साल की पुत्री चम्पावती और चार साल के अबोध बच्चे सुन्दरसिंह को भी वही मार्ग पसन्द आया।

दोनों बच्चे सब कुछ भूल कर जङ्गल में खेलते-रहते थे। चम्पावती फूलों की माला गूँथती और अपने छोटे भाई के गले में डाल कर खुश होती! एक दिन भूख से व्याकुल होकर वह बेचारा बच्चा रोने लगा। यह देख

अमिता कुमारी
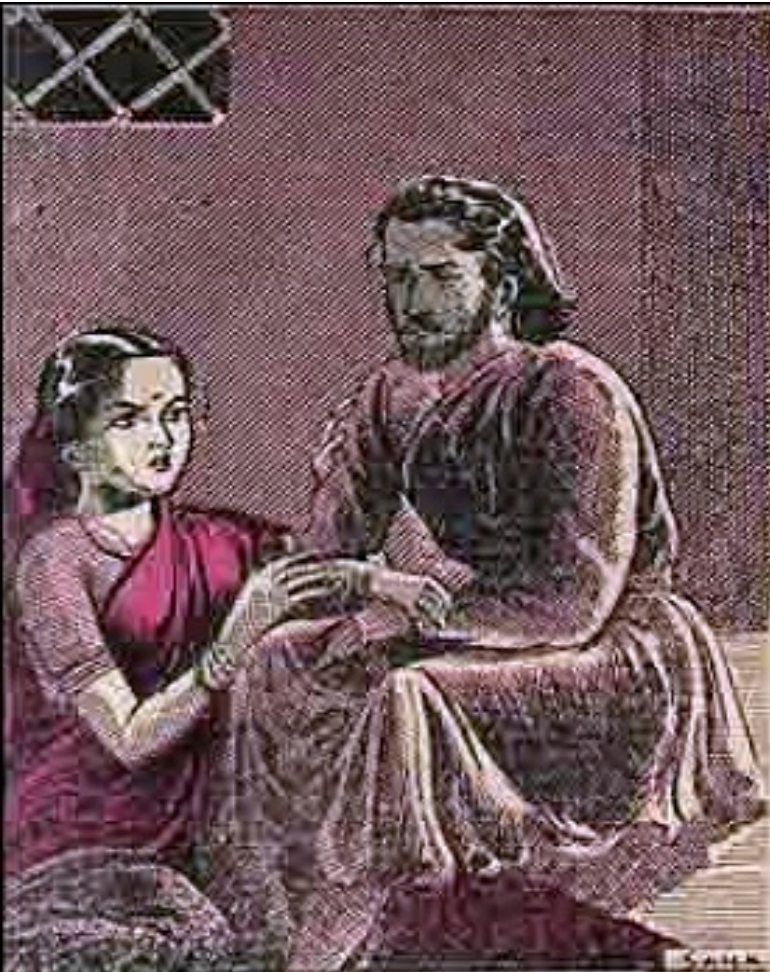
कर चम्पावती ने कहा—' बाबू, इसके लिए ही रोते हो?' और उसे उठाकर अन्दर ले गई।

* * *

महाराणा प्रताप और उनकी पत्नी सुगुणा मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए उदास भाव से बैठे हुए थे। बैठे-बैठे प्रताप ने एक लम्बी-साँस छोड़ी और कहा—' प्रिये! भाग्य का उलट-फेर देखा तुमने? एक ब्राह्मण अतिथि आया था। लेकिन आज हमारे घर से वह खाली लौट गया। मेरी जिन्दगी में यह पहली घटना है। राजस्थान के मुकुट-मणि और चितौड़ के राज-वंश के लिए यह लज्जा की ही बात है न! यों राज-वंश की प्रतिष्ठा को धूल में मिला कर, कहो—अब मैं क्यों जीऊँ? ऐसा कह कर उन्होंने फिर उसाँस छोड़ी।
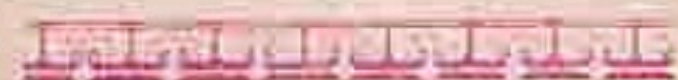
सुगुणा ने अपने पति के मन को बहलाने की बहुत कोशिश की, इससे उनको कुछ सान्त्वना मिली। लेकिन आज तक किसी बात से मुझे इतना दुख नहीं हुआ, कोई कष्ट मुझे इतना सता नहीं सका था। जिस समय रोटी के टुकड़े के लिए चिल्लाता मेरा स्वर्ण-धन उठ गया था, तब भी मैंने धैर्य नहीं छोड़ा! लेकिन....लेकिन....आज एक ब्राह्मण मेरी कुटिया में आकर भूखा ही लौट गया! यह अपमान, यह वेदना, मुझ से सही नहीं जाती!!' ऐसा कहते-कहते राणा प्रताप मूर्छित होकर गिर पड़े!

इतने में भाई का हाथ पकड़े चम्पावती पिता के पास आ पहुँची और बोली—' चिन्ता मत कीजिए बाबूजी! आप जो सोच रहे हैं कि वह ब्राह्मण खाली चला गया है, ऐसी बात नहीं! वह नहाने गया है, अभी आएगा! उसको खिला-पिला कर विदा करने का भार मेरे ऊपर है।' राणा अचम्भे में पड़ गए! उन्होंने बड़ी

आतुरता से पूछा—'बिटिया रानी, तब तो तुमने मेरी इज्जत बचा ली। बहुत अच्छा! लेकिन समझ में नहीं आता है कि तुम उस ब्राह्मण को कैसे तृप्त करोगी!'

'पिताजी, दो रोज से मेरे हिस्से की रोटी वैसे ही रखी हुई है, वही खिला दूँगी! उनके लिए मैंने कुछ साग भी तैयार कर लिया है, अब चिन्ता किस बात की!' उसने जवाब दिया।

महाराणा की आँखें छल-छला आईं!

* * *

नहा-धो कर ब्राह्मण आ गया। उनके बैठने के लिए चम्पावती ने आसन लगा रखा था। आते ही रोटी परोस दी गई। ब्राह्मण खुश होकर खाने लगा। चम्पावती ने कहा—'महाराज! हम लोग जङ्गल में रहते हैं, इसलिए और कुछ तैयार नहीं कर सके!'

बेटी, ऐसा मत सोचो! ऐसा अमृत-भोजन मैंने अपने जीवन में कभी नहीं किया था। सदा प्रसन्न रहो पुत्री!' आशीर्वाद देकर वह ब्राह्मण चला गया। यह बात पिता से कहने के लिए चम्पावती भीतर गई, लेकिन कमजोरी के कारण गिर पड़ी और मुँह से कोई बात न निकली!

राणा ने आकर देखा, सुगुणा पास ही बैठी थी। राणा के सिर में चक्कर आने लगा। उन्होंने कहा—'प्रिये! मेहरबान बादशाह ने सुलाह का पैगाम भेजा है।

इतने में बाहर कुछ पैरों की आहट हुई। राणा ने उत्साह से कहा—'शायद बादशाह के ही आदमी होंगे।' काँपते शरीर से चम्पावती सहसा उठ खड़ी हुई और भावावेश के साथ कहने लगी—'पिताजी! बादशाह की दया आप की समझ में अब आई है! कल वह आप को बहुत बड़ा ओहदा देंगे, परसों फिर आप को गुलाम

बनाएँगे। इसी से आप को संतोष है ! राज पुत्र का पौरुष जो धग्-धग् जल रहा था, उसे बुझा दीजिए! हल्दीघाटी की लड़ाई में जिन लोगों ने वह नारा लगाया था— 'राजा की संतान सिंहों की संतान है!' जिसे सुन कर अकबर के कान फट गए थे, आज वही राणा सिर झुका कर उसके पास जाएँगे!' राणा प्रताप तिल-मिला उठे। उन्होंने ओजस्वी स्वर में कहा—'बेटी, चम्पा! वैसे नीच की शरण में तुम-सी वीर बेटी का यह पिता नहीं जाएगा! तुम्हारी तकलीफें देख कर ही वह बात मेरे मुँह से निकल गई थी, बेफिक्र रहो बेटी! मैं अकबर की दासता कभी नहीं कबूल करूँगा .....!' ऐसा कहते राणा ने देखा कि चम्पावती ने सदा के लिए आँखें मूंद ली!

इतने में बाहर से आवाज़ आई—'सत्य! सत्य!! हम अकबर के मातहत कभी नहीं रहेंगे!' यह सुन कर राणा विस्मित हो उठे और देखा कि वही ब्राह्मण आ रहा है!

उसने आते ही राणा का हाथ अपने हाथ में ले लिया और चम्पावती को देख कर आँसू ढालता कहने लगा—'राणा! परमपवित्र इस फूल को मुर्झाने वाला वही बादशाह है! इस बेटी का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित होगा, इस चम्पावती के सामने भगवान को साक्षी रख कर कहता हूँ, आज से हम में कोई दुश्मनी नहीं रही! अपना राज्य तुम निश्चिन्त होकर सम्हालो!' ऐसा कहते हुए उसने राणा को अपनी भुजाओं में कस लिया!

मुख-चित्र

*

चन्दामामा के मुख पृष्ठ पर बनी तस्वीर को गौर से देखो। माँ के अगल-बगल दो दुलारे भाई-बहन खड़े हैं। उन दोनों के हाथों में माँ ने फुलझड़ियाँ थमा दी हैं। उनके प्रकाश में वे दोनों चन्दामामा के समान चमक रहे हैं। अगर तुम ज़रा कान लगा कर सुनो, तो तुम्हें मालूम होगा कि दोनों एक सवाल भी करते जा रहे हैं—'माँ, हर अमा की रात को हम दीपावली क्यों नहीं मनाते?'

उसके जवाब में माँ कहती है—'बच्चो! इसके लिए तुम्हें 'चन्दामामा' खोल कर पढ़ना चाहिए। उस में दीपावली के बारे में बहुत सी अच्छी और ज्ञान बढ़ाने वाली बातें मिलेंगी। यहाँ मैं थोड़े में तुम को बता देती हूँ, कि यह दीपावली खास कर लक्ष्मी-पूजन का त्योहार है, साथ-साथ इस में हमारे देश के कई पुराने प्रसिद्ध वीरों की कहानियाँ भी जुड़ी हुई हैं।

कहा तो जाता है, कि नरकासुर नामक एक राक्षस था। उस को मारने के लिए भगवान कृष्ण के साथ-साथ देश के बालक-दल ने जो अस्त्र-शस्त्र छोड़े थे, और उस के मरने पर सारे देश में जैसे खुशी मनाई गई थी, उसी की याद में हम लोग आज यह आतिशबाजियाँ छोड़ते हैं और कतार से दीपक जलाते हैं।

कहीं-कहीं यह भी कहा जाता है कि भारत-लक्ष्मी सीता को चुराकर ले जाने वाले लङ्का के राजा दुष्ट रावण को पराजित कर भगवान रामचन्द्र आज ही के दिन विजय-पताका उड़ाते अपने देश लौटे और उनके स्वागत में जैसी धूम-धाम से समस्त देश में घर-घर दीपावली मनाई गई कि, उस की यादगारी आज तक यों चली आ रही है।'

सच पूछो, तो दीपावली आलोक-पूजा का त्योहार है। प्रकाश-प्रिय प्राणी अंधकार में रहना पसंद नहीं करते। इसलिए वे अंधकार में दीपक जलाते हैं, और उन के प्रकाश में तुम्हारे जैसे किशोर-वय वाले पढ़-लिख कर ज्ञान का प्रकाश पाते हैं। अब आओ, फुलझड़ियाँ जला कर 'चन्दामामा' के पन्ने उलटो।

अकल के दुश्मन

लड़का एक बेहद मिठाई-खोर था।
मूर्ख भी था साथ में, और चोर था।
देखा माँ को एक दिन सोते हुए,
थे बताशे बक्स में रक्खे हुए।
जेब में रख एक वह चलता हुआ
बाग में फिर बाप के पास आ गया।
बाप के पीछे हुआ आकर खड़ा
पास ही रखा था पानी का घड़ा।

झट बताशे को घड़े में डाल कर
खेलने में लग गया वह बेखबर!
खेल भी होता रहा और काम भी;
दिन जो बीता होने आई शाम भी।
हो चुका है काम अब बाहर चलें
बाप बोला—'आओ बेटा! घर चलें।'
हो गया तैयार लड़का भी मगर
जब घड़े में हाथ देखा डाल कर।
उसमें पानी के सिवा कुछ भी न था।
बाप से पूछा—'बताशा क्या हुआ?'
और जब देखा घड़े में झाँक कर
सूरत अपनी ही उसे आई नज़र
बाप से फिर उसने चिल्ला कर कहा—
'देखो! इसमें एक लड़का है छिपा!
इस घड़े में यह जो आता है नज़र;

खा लिया होगा इसी ने क्या खबर !!'
बाप बूढ़ा और कुछ मूर्ख भी था;
सूझा गुस्से में उसे कुछ भी न था।
जाके तब देखा घड़े में घूर कर;
शकल अपनी ही उसे आई नज़र!
देखा उसने सिर घुमा कर बार-बार;
लाल फिर गुस्से से होकर वह गँवार—
कट-कटा कर दाँत यों उसने कहा—
'डूब मर जाकर कहीं ओ बेहया!
शर्म भी तुझको नहीं आई ज़रा!
बूढ़ा हो करके बताशा खा गया...!!
मेरी जितनी उम्र का बूढ़ा है तू—
बोल! क्या अब भी कोई बच्चा है तू?'
जब न देखा उस प बातों का असर
घूँसा एक मारा घड़े को खींच कर

फूट कर के वह घड़ा चूर हो गया।
और पानी में बताशा खो गया!!

'चोर का भाई गिरह-कट!'

हमारी भाषा में यह लोकोक्ति बहुत प्रसिद्ध है। यों हर चोर आदमी होता है-किन्तु हर आदमी चोर नहीं होता। चोर उस मनुष्य का उपनाम है जो चोरी करता है। मनुष्य जब उन्नति करता है, तो सेठ, साहूकार, मंत्री, या राज्यपाल बनता है। मगर जब चोर उन्नति करता है, तो डाकू बन जाता है। जैसे 'जग्गा' और भूपत, डाकू। वैसे चोर न्यायी भी बहुत होता है; चोरी किए माल में से अपने साथियों को बराबर का हिस्सा देता है।

एक चोर का भाई गिरह-कट होता है, जो चोर से ज्यादा चालाक होता है, रास्ते में चलते-फिरते आदमियों की जेब काट लेना इस के बाएँ हाथ का खेल है। इस को लोग जेब-कट भी कहते हैं। योरोप में ऐसे-ऐसे जेब-कट भी हो गए हैं, जिन्होंने बड़े-बड़े वजीरों और राजाओं की जेबें भी काट ली थीं।

ये बड़े ठाठ-बाठ से रहते हैं। इस लिए, कि कोई इन्हें पहचान न सके। इन से सदा होशियार रहना चाहिए।

'खरबूजा खरबूजे को देख कर रंग बदलता है!'

यह फल पीला-पीला होता है, और कुछ मुलायम भी। ऊपर की लोकोक्ति को देखते हुए तो हम को महसूस होता है कि खरबूजे के आँखें होती होंगी, परन्तु ऐसा नहीं है। खरबूजा रंग अवश्य पकड़ता है, और पकड़ने के बाद छोड़ता भी नहीं है।

खरबूजे के ऊपर लकीर दार खाने बने होते हैं। कारण यह कि, भाई-बहन आपस में झगड़ा न करें और अपना-अपना हिस्सा बराबर काट लें। खरबूजा दुनियाँ के गोलक से कुछ छोटा होता है, किंतु दुनिया के समान ही होता गोल है। यह बहुत मुलायम होता है, इसी से एक और लोकोक्ति है—'चाहे छुरी खरबूजे पर गिरे या खरबूजा छुरी पर—बात एक ही है!' खरबूजे में गूदा तो कम होता है, परन्तु बीज बहुत ज्यादा होते हैं। अगर इस में बीज नहीं हों, तो यह बहुत हलका हो जाए, और बेचने वालों का दीवाला ही निकल जाए!

प्राचीन काल की बात है। एक देश में तीन चोर रहते थे। तीनों एक-से एक बढ़े-चढ़े थे।

एक दिन तीनों चोर एक भोजन-गृह में मिले। तीनों एक ही पेशेवर होने के कारण झट दोस्त बन गए। अब 'कौन बड़ा कहलाए!' यह बहस छिड़गई।

पहले चोर ने कहा—'मैं घोंसले में से चिड़िए के अंडे इस चालाकी से उठा लाऊँगा कि चिड़िए को भी मालूम न हो सके!'

दूसरे ने कहा—'मैं रास्ते पर चलते हुए आदमी के पाँव में से उसके जूतों के तले भी काट ला सकता हूँ!'

अब तीसरे चोर ने कहा—'मैं अपने साथ भोजन करने वाले आदमी की थाली से, उसके जाने बिना ही, उसके पकवान अपनी जेब में डाल कर ले आ सकता हूँ!'

तीनों चोर एक रोज मिले और यों सोचने लगे—'चाहे हम कितनी भी चालाकी से चोरी क्यों न करें, अगर कभी पुलिस वालों की नजरों में पड़ गए, तो वे हमें पकड़े बिना तो नहीं छोड़ेंगे! यों अगर हम पकड़े गए, तो मरने तक हमें जेल में ही रहना पड़ेगा! इसलिए अगर हम अपनी चालाकी से राजा के पास कोई नौकरी हासिल कर लें, तब फिर हमारी यह हालत न रह जाएगी!'

यह सोच कर तीनों चोर राजधानी की ओर रवाना हो गए।

राजधानी पहुँच कर चोर एक सराय में उतरे। राजा से मिलने के लिए खाली हाथ नहीं जा सकते थे। इसलिए उन्होंने निश्चय किया—'कल दोपहर तक कहीं से तीनों, तीन अनमोल वस्तु प्राप्त करके ले आएँ.....!' ऐसा तय करके तीनों निकल गए।

कृष्णा कुमारी

पहला चोर राजा के बाग में घुसा। उस बाग में राजा का प्यार से पाला हुआ एक मोर था। मोर को अंडे देते हुए देख कर वह चोर उसके अंडे जेब में डाल कर ले आया!

राजा को मालूम हो गया कि मोर के अंडे गायब हो गए। बाग के रखवालों पर खूब डाँट-डपट पड़ी और उन्हें हुक्म हुआ कि कल साँझ तक जहाँ से हो ले आकर वे अंडे दें, वरना—मौत के हवाले कर दिए जाएँगे!'

दूसरा चोर राजा के खास-दरबार में प्रवेश कर गया! मन्त्री लोग राजा के आने की राह देखते इधर-उधर घूम रहे थे। उनमें प्रधान-मन्त्री एक मोटा-ताजा आदमी था। उसने जो जूते पहन रखे थे उनके तले काट कर वह चोर चलता बना!

राजा आकर जब सिंहासन पर बैठ गया, तब एक-एक करके सब मन्त्री आगे आए और घुटनों के बल झुक कर राजा को प्रणाम किया। इस तरह जब प्रधान-मन्त्री घुटनों के बल झुक कर प्रणाम करने लगा तो उसकी बगल में खड़े लोग काना-फूसी करके हँसने लगे। राजा को मालूम हो गया कि मन्त्री के पैरों के जूतों के तले गायब हैं। 'मेरा अपमान करने के लिए ही मन्त्री बिना तले वाले जूते पहन कर आया है!' यह सोच राजा को बड़ा गुस्सा आया और उसने हुक्म दिया—'कल शाम तक अगर तुम अपनी इस ढिठाई की कैफियत नहीं दोगे, तो मार डाले जाओगे!'

तीसरा चोर राजा के भोजन-गृह में प्रवेश कर गया। राजा आकर भोजन करने बैठा। रसोइया राजा की थाली में परसने के लिए लड्डू मिठाई आदि ले आया। वह चोर किसी के जाने बगैर ही पकवान

कर दो, तो तुम्हें माफ करके इनाम ही नहीं दूँगा, बहुत बड़े ओहदे पर भी बिठा दूँगा!'

'बहुत अच्छा, आज्ञा दीजिए— वह काम क्या है?' चोरों ने कहा।

राजा ने कहा—'कल सुबह मेरे खज़ाने में से तुम लोग तीन मणि चुराकर मेरे सामने पेश करो! साथ ही याद रखो— अगर नहीं ला सके, तो काट डाले जाओगे!'

राजा की बात सुन चोरों ने आपस में कुछ सलाह की और फिर कहा—'बहुत अच्छा! लेकिन एक बात सुनिए! हम जो, मणि ले आएँगे, वे आप ही के खजाने के हैं, इस में आप को शुबहा हो सकता है। इसलिए अपने खजानची को हुक्म दे दीजिए कि वह सब मणियों को गिन रखे। अगर कल उन में से तीन मणि कम हो जाएँ, तो यह साबित हो जाएगा कि हम जो मणि लाए हैं वह राजा के ही खजाने के हैं।'

राजा ने हामी भर दी और खजानची को हुक्म दिया कि शाम के पहले ही मणियों का हिसाब कर ले।

राजा के खजाने में मणियों की कई थैलियाँ थीं। उन सब का हिसाब लगाना एक आदमी के वश की बात नहीं थी। इसलिए खजानची ने राजा के यहाँ काम करने वाले बड़े-बड़े ओहदेदारों को मणियों की गिनती करने के लिए बुला भेजा।

उन ओहदेदारों में हमारे तीनों चोर भी वेश बदल कर मिल गए और खजाने में जा पहुँचे।

दूसरे दिन प्रातःकाल राजा के हाथों में चोरों ने तीन मणियाँ ला कर रख दीं।

खजानची के पास खबर भेजने पर राजा को मालूम हो गया कि कल से आज तीन मणि कम हो गई हैं।

राजा बहुत खुश हुआ। तीनों चोरों को खूब इनाम दिए और उन्हें बड़े-बड़े ओहदों पर बिठा दिया।

के तीन हिस्से जेब में डाल कर गायब हो गया!

राजा की भूख न मिटी, उसने कुछ और माँगा, लेकिन वहाँ और था ही क्या? 'रसोइए जमा होकर सब कुछ अपने ही पेट में ठूँसते जा रहे हैं—' यह सोच कर राजा को बेतरह गुस्सा आ गया और उसने हुक्म दिया—'कैफियत न देने पर कल साँझ तक रसोइयों को कत्ल कर दिया जाए।'

दूसरे दिन दोपहर को राजा दरबार में आकर बैठा। हमारे तीनों चोर भी अपनी-अपनी भेंट लेकर दरबार में हाजिर हुए।

राजा बोला—'कल रख वाले की लापरवाही से मेरे बाग के मोर के अण्डे गायब हो गए। कल प्रधान मन्त्री बिना तले के जूते पहन कर सभा में आए। कल ही रसोइयों ने मेरे लिए काफ़ी पकवान नहीं बनाए! आज शाम को इन सबों को मार डालने का मैंने हुक्म दे दिया है। कल की इन सब हरकतों के लिए कोई-न-कोई कारण जरूर होगा, जो आदमी वह भेद बता सकेगा, उसे मैं बहुत इनाम दूँगा। और लोगों को सजा दिए बगैर छोड़

भी दूँगा!' राजा ने अत्यन्त गम्भीर होकर कहा।

यह सुन कर तीनों चोर उठे और राजा के चरण-तल में मोर के अंडे, जूतों के तले और पकवान वगैरह रख कर उन्होंने सारी चालाकी सुना दी, और फिर घोषणा के अनुसार राजा से इनाम माँगा।

चोरों का साहस देख कर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा—'वचनानुसार इनाम देने में मुझे कोई एतराज नहीं! लेकिन तुम लोगों ने जो काम किया है, उसके लिए तुम्हें कानूनन सजा मिलनी चाहिए। लेकिन अगर तुम लोग मेरी एक बात पूरी

दीपों का त्योहार दिवाली !

श्री 'अशोक' बी. ए.

★

सजे नगर, बाजार, द्वार, घर, चारों तरफ उजाला छाया !
जगमग दीपों के प्रकाश ने अंधकार को दूर भगाया ॥
रङ्ग-बिरङ्गे वस्त्र पहन कर, नाचें बालक दे दे ताली !
दीपों का त्योहार दिवाली ! दीपों का त्योहार दिवाली !!

आज खुशी से झूम उठा है, सारे जग का कोना-कोना !
हर्ष प्रेम, सुख में सब डूबे, कहीं नहीं है रोना-धोना ॥
रङ्ग बिरङ्गे फूलों वाली, झूम रही है डाली-डाली ।
दीपों का त्योहार दिवाली ! दीपों का त्योहार दिवाली !!

तरह-तरह की बना मिठाई, हर्षित होता है हलवाई ।
लड्डू, पेड़े, बर्फी, चमचम, रसगुल्ले, हैं.... दूध-मलाई ॥
खील-बताशे खाकर बच्चे, चला रहे बन्दूक दुनाली ।
दीपों का त्योहार दिवाली, दीपों का त्योहार दिवाली !!

अरुण, अजय, अनिल और अन्नू, जला रहे फुलझड़ी-पटाके ।
तरह तरह के फोड़ पटाके, करते हैं वे धूम-धड़ाके ॥
घर-घर लक्ष्मी-पूजन होता, होती है घर-घर खुशियाली ।
दीपों का त्योहार दिवाली, दीपों का त्योहार दिवाली !!

जैसे दीवाली में होती, सब चीजों की साफ-सफाई ।
वैसे ही तुम दूर करो सब, बुरी आदतें और बुराई ॥
मीठे वचन सभी से बोलो, कभी न बकना मुख से गाली ।
दीपों का त्योहार दिवाली ! दीपों का त्योहार दिवाली !!

गांधार देश में कुबेर नामक एक बड़ा व्यापारी रहता था। छोटे-छोटे कारोबार करने के बाद वह करोड़ों का व्यापार करने लग गया। कुबेर गुप्त के कीर्तिसागर नामक एक पुत्र था। वह सूरत-शकल में ही नहीं, शारीरिक साहस और बुद्धि-चातुरी में भी नाम पाने लगा। सब से बड़ी बात तो उसमें यह थी, कि वह बड़ा ही दयालु हृदय वाला था। कीर्तिसागर जब तक सयाना हुआ तब तक कुबेर गुप्त का बुढ़ापा आ गया। इसलिए कुबेर गुप्त ने बेटे को बुला कर सारा व्यापार सौंप दिया। एक दिन कीर्तिसागर ने समुद्र-यात्रा की बात सोची और उसके लिए सब तैयारियाँ कर लीं। नावें अनेक प्रकार की वस्तुओं से भरी हुई तैयार थीं। कुछ दोस्त-मित्र भी साथ चल पड़े।

जाते-जाते कुछ दिनों के बाद उन्हें एक किनारा मिला। उस किनारे पर नावें लगीं और लंगर डाल दिए गए। फिर मैदान में उतर कर तम्बू ताने गए। कीर्तिसागर के अपने सब लोग थके-माँदे थे, इसलिए जल्दी ही सो गए। कीर्तिसागर की आँखें नहीं झपकीं। सहसा उसके कानों में एक विचित्र आर्त्तनाद आकर पड़ा।

कीर्तिसागर चौंक कर उठा और उस ध्वनि का पीछा करता आगे बढ़ता गया। जाते-जाते वह एक जंगल में पहुँच गया और जो कुछ देखा उससे उसका कलेजा दहल उठा।

कुछ लोगों को कुछ व्यापारी कोड़े मार रहे थे और वे ही लोग आर्त्तस्वर से रो रहे थे!

उनके पास जाकर कीर्तिसागर ने गरज कर कहा-'रुक जाओ उन्हें मारो मत!

पहले यह बताओ कि उनका अपराध क्या है ?' यह सुनकर उन व्यापारियों ने लापरवाही से कहा—'अपराध-शराध कुछ नहीं! तुम्हें इससे क्या मतलब! जाओ, भागो यहाँ से! ये लोग गुलाम हैं! हमने इन्हें कीमत देकर खरीदा है। इनको दूसरी जगह ले जाकर बेच देना ही हमारा कारोबार है। अगर ये लोग हमारे साथ अपनी इच्छा से नहीं चलेंगे तो हम यों ही इन्हें मार-पीटकर साथ ले जाएँगे!'

यह सुन कर कीर्तिसागर ने उनसे कहा—'अरे, तुम लोग गुलामों के कारोबारी हो! बहुत अच्छा, तो इन सब को मैं खरीद लूँगा। बताओ, क्या दाम है इनका?'

इस तरह व्यापारियों ने जो रकम माँगी, उसे चुका कर कीर्तिसागर ने उन सब गुलामों के बन्धन खोल डाले। फिर कीर्तिसागर ने हर एक से पूछ-ताछ की और उनके नाम-धाम जाने और सबों को अपने-अपने घर जाने का इन्तजाम कर दिया। यह देख सब के सब गुलाम बहुत खुश हुए और कीर्तिसागर का गुण गाते हुए अपनी-अपनी राह चले गए।

गुलाम जब अपने घर चले गए, तब वहाँ सिर्फ एक सुन्दरी और एक बूढ़ी रह गई। पूछने पर उस सुन्दरी ने यों कहना शुरू किया—'मैं उत्कल देश की राजकुमारी हूँ! यह मेरी दादी है। हम जब देवी के मन्दिर में पूजा कर रही थीं, तो ये व्यापारी वहाँ आए और बाँध-छाँध कर हमें यहाँ ले आए!'

वहाँ से उत्कल देश सैकड़ों मील दूर था। इसलिए वे दोनों कीर्तिसागर के साथ गांधार देश जाने को तैयार हो गईं। उन दोनों को साथ लेकर कीर्तिसागर अपने डेरे की ओर लौटा।

डेरे पर पहुँचते ही कुबेरगुप्त बड़ी आतुरता से बेटे के पास पहुँचा। वह इस आशा से

'बेटा, जो हो गया सो हो गया! एक मौका और देता हूँ तुम्हें। इस बार मेरे कहे मुताबिक तुम चलो और महान सम्पत्तिशाली होकर लौटो।'—कहते हुए वह बेटे को खुद बन्दरगाह के पास ले गया। वहाँ एक जहाज तैयार था। उसे देख कर कीर्तिसागर अचम्भे में आ गया! यह क्या? जहाज के आगे, सब की नजरों में पड़ने लायक, उत्कल राजकुमारी की बड़ी प्रतिमा टँगी हुई थी!

कीर्तिसागर ने पूछा—'यह क्या है?'

इसके जवाब में उसका बाप बोला—'इसमें रहस्य तो कुछ नहीं, लेकिन मुझ से मत पूछो। मन पर काबू रख कर कारबार करो। लाभ उठाओ तुम्हारे आने तक ये दोनो यहीं रहेंगी!!'

कीर्तिसागर रवाना हुआ। चलते-चलते बहुत दिनों के बाद वह जहाज एक बंदरगाह पर लगा। तभी राजा के कुछ सिपाही आए और कीर्तिसागर को बाँध कर उस देश के राजा के पास ले गए! कुछ न समझ कर कीर्तिसागर विस्मय से भर गया। उसने राजा से पूछा—'यह कैसा अन्याय है महाराज?' यह सुनकर राजा का क्रोध और भी भड़क उठा। उसने गरज कर कहा—'दुष्ट कहीं का! मेरी राजकुमारी की प्रतिमा तूने जहाज में लगा रखी

आया था कि देखें मेरा बेटा कितना धन कमा लाया है। लेकिन उसके जवाब में कीर्तिसागर ने उसके सामने सुन्दरी और बुढ़ी को खड़ा कर दिया! उसने व्यंग से कहा—'बहुत बड़ा काम कर आए हो! जाओ—देख ली तुम्हारी चातुरी!!'

बाप की यह बात सुन कर कीर्तिसागर को क्रोध आ गया। सुन्दरी और बुढ़ी को साथ लेकर वह घर से निकल पड़ा। बेकसूर बेटे को घर से जाते देख कर बाप का दिल पिघला और उस ने आदमी भेज कर कीर्तिसागर को बुलवा लिया।

है!! बोल, कहाँ छिपा रखा है उसे! सच बोल, नहीं तो देख लेना, तुम्हारी क्या हालत होती है!!' कीर्तिसागर की समझ में शीघ्र आ गया कि वह उत्कल देश में आ गया है। कीर्तिसागर सूझ-बूझ का आदमी था। इसलिए उसने समझा-बुझा कर राजा को शांत किया और अपनी पूरी कहानी उसे कह सुनाई।

कीर्तिसागर की बात सुन कर राजा को परमानंद प्राप्त हुआ। फौरन उसने उसके बन्धन खुलवा दिए और अपने पास बिठा कर उसकी खूब आव-भगत की।

कीर्तिसागर के कहने पर उत्कल महाराज मंत्री और परिवार के साथ गांधार देश को चल पड़े। यों उत्कल महाराज को अपने घर आए हुए देख कर कुबेरगुप्त फूला न समाया! राजकुमारी दौड़ती हुई आकर बाप से लिपट गई। यह देख कर उत्कल महाराज की आँखें आनंद-अश्रु से उमड़ पड़ीं!

राजा ने कहा—'ऐसी धर्म-बुद्धि वाले और प्रयत्नशील दामाद को पाकर मैं आज धन्य हो गया! मेरे सारे अरमान पूरे हो गए!!' कुबेरगुप्त ने खुशी से उमड़ कर हामी भर दी। अपनी राजधानी में ही ब्याह करने का उत्कल महाराज ने निश्चय किया। इस लिए सब

लोग शीघ्र वहाँ से रवाना हो गए। बीच समुद्र में पहुँचने पर उत्कल-राज के मंत्री के मन में दुष्टता पैदा हो गई। उसने सोचा—'अगर यह शादी हो गई, तो दरबार से मेरा बोल-बाला ही उठ जाएगा!' यह दुष्टता मन में आते ही उसने सोए हुए कीर्तिसागर को उठा कर समुद्र में फेंक दिया। सवेरा होने पर लोगों को पता चला कि कीर्तिसागर लापता है! अब क्या किया जाए! विवश होकर सब लोग अपने-अपने घरों को लौट गए। उधर सागर में फेंके जाने पर कीर्तिसागर तैरने लगा और तैरते-तैरते एक द्वीप में जा पहुँचा। वह

द्वीप एकदम निर्जन था। कुछ दिनों तक वह वहाँ रहा। उसके बाद एक दिन एक जहाज वहाँ आ पहुँचा। उस जहाज को चलाने वाला एक बूढ़ा था। उसने कीर्तिसागर से पूछ-ताछ करके सारी बातें जान लीं।

उस बूढ़े ने कीर्तिसागर से पूछा—'अगर मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँ, तो तुम मुझे क्या दोगे?' 'अपनी आधी सम्पत्ति तुम्हें दे दूँगा'—फौरन कह उठा वह कीर्तिसागर। वह बूढ़ा कीर्तिसागर को लेकर सीधे उत्कल राज्य के तट पर पहुँचा और उसे उतारकर, बिना कुछ बोले ही, अपनी नाव लेकर चला गया।

कीर्तिसागर जहाज से उतर कर सीधे राज-महल की ओर चला। महल में जाते समय सिपाहियों ने उसे पकड़ा और ले जाकर राजा के सामने खड़ा कर दिया। कीर्तिसागर को देखते ही राजा की खुशी का ठिकाना न रहा। असीम वेदना में पड़ी हुई राजकुमारी के कानों में जब यह खबर पहुँची, तो उसके अधमरे शरीर में प्राण लौट आए!

उसके बाद सच-झूठ का पता चल गया। लेकिन कीर्तिसागर की इच्छा से राजा ने अपराधी मन्त्री को छोड़ दिया। फिर कीर्ति-सागर और राजकुमारी की शादी धूम-धाम से हो गई। राजा ने संकल्प कर लिया था कि वह कीर्तिसागर को ही अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाएगा। इसलिए एक अच्छी साइत देख कर उसके राज-तिलक का इन्तजाम किया गया। नवरत्नों से खचित वस्त्रालंकारों तथा मणिमय मुकुट से सज्जित कर के कीर्तिसागर राज-सिंहासन पर बिठा दिया गया। राज-सभा नव प्रभा से जग-मगाने लग गई। आनन्द की उस घड़ी में एक गरीब बूढ़ा वहाँ आ पहुँचा। राज-दूत उसे डाँट-डपट कर बाहर खदेड़ने लगे। लेकिन कीर्तिसागर ने उसे पहचान लिया और झट

उसे बुलवाया और अत्यंत आदर-पूर्वक अपने पास बिठा लिया।

किसी को कुछ भी पता न चला! सब लोग आश्चर्य से देखने लगे। उसके बाद कीर्तिसागर ने उत्कल-राज्य का एक मानचित्र मँगवाया और उसे सभा की दीवार पर टँगवा दिया। फिर उस बूढ़े की ओर मुड़ कर कहा—'दयालु-पुरुष! तुमने जो उपकार किया है, मैं उसे इस जन्म में नहीं भूल सकता! देखो, यह उत्कल-राज्य का चित्र है! ईश्वर की दया से आज मैं इस राज्य का अधिकारी हो गया हूँ! अब इस मान-चित्र में से तुमको जो हिस्सा लेना हो, आधों-आध लकीर खींच डालो—अभी दे दूँगा तुम्हें उत्कल का आधा राज!'

यह सुन कर उस बूढ़े की आँखें छल-छला आईं! वह कीर्तिसागर के पैरों पर जा पड़ा और गद्-गद् स्वर में बोला—'कीर्तिसागर! सच-मुच तुम सद्गुण-सागर भी हो! मुझे यह राज्य क्यों? तुमको याद हो या न हो, हजारों की कीमत वाला स्वातंत्र्य-राज्य तो तुमने बिना माँगे मुझे उसी दिन दया करके दे दिया था! मैं कोई नाविक नहीं हूँ, उन्हीं गुलामों में से एक हूँ, जिन्हें तुमने गुलामी के बन्धनों से मुक्त करके आजाद कर दिया था!! तुम्हें कष्ट में पड़े देख कर, कुछ ऋण मुक्त होने के ख्याल से मैं नाव लेकर तुम्हारे पास आ गया था। अभी तुम राजा होने जा रहे हो—यह जान कर तुम्हें आशीर्वाद देने आया हूँ! नहीं तो मुझे इस राज्य से क्या मतलब?'

कीर्तिसागर ने राज्य-सभा के सामने उस बूढ़े का बखान किया। सारी बातें सुन कर सब लोग विस्मय से कहने लगे—'गुलाम होने से क्या होता है? हाथ में आए हुए आधेराज्य को जिसने यों छोड़ दिया, वह कितना बड़ा त्यागी-पुरुष हो सकता है!'

योरोप का जङ्गली-सूअर अपने ही दाँतों से मारा जा सकता है! उसके ऊपर का दाँत हमेशा नीचे के दांत से रगड़ खाते रहने के कारण घिस-घिसा जाता है—अगर नीचे का दाँत टूट जाय तो भी ऊपर का दाँत टेढ़े-मेढ़े ढङ्ग से बढ़ता रहता है! और बढ़ते-बढ़ते उसकी खोपड़ी में जाकर घुस जाता है—!!

'ब्लू-ह्वेल' संसार का सब से बड़ा जीव माना जाता है! इसकी लम्बाई १०० फुट से भी ज्यादा होती है! वह दूध पिलाने वाला जीव होता है—इसे मछली नहीं कह सकते! यह अद्भुत और बड़ा... ब्लू-ह्वेल, नार्थ-ऐटलांटिक के समुद्र में पाया जाता है...!!

भारत मेरा अति महान

मेरी नयन-ज्योति! मेरा प्राण, मेरा भारत अति महान।
उत्तर तेरे खड़ा हिमालय अपनी छाती तान,
गङ्गा यमुना तेरी बाहें मालव, तेरा प्राण।
तेरी गोद गरब-गर्बीली, हुए जहाँ शूर लासानी
शेर सुभाष, पटेल नीति-प्रिय, बापू से सेनानी!
शिवि, दधीचि राणा प्रताप सम प्रकट हुए गुणवान।
शुकदेव विरागी, दयानन्द अनुरागी और वशिष्ठ सम ज्ञानी,
तेरी महिमा गा-गा कर है धन्य हुई जिनकी वाणी;
मेरी नयन-ज्योति! मेरा प्राण, मेरा भारत अति महान!!

प्रह्लाद दास अग्रवाल

रंगीन चित्र-कथा, तीसरा चित्र

वह आवाज उसी ज्वाला-मुख राक्षस की थी। धम-धम करते और गरजते हुए उसने भोजन-गृह में प्रवेश किया।

'कहाँ है वह आदमी? वह दुष्ट—कहाँ—बताओ ...जल्दी बताओ!' कहता हुआ, घर के कोने-कोने में खजने लगा। यह देख कर उसकी स्त्री ने दृढ़ता से कहा—'आ जाओ! अभी यह गड़-बड़ी क्या? यहाँ आदमी है न आदमजात!' उसकी बात सुन कर वह शान्त हुआ और भोजन करने बैठ गया।

भोजन करते ही वह चिल्ला उठा—'अरे, मेरी सुनहली-मुर्गी कहाँ है?' यह सुन कर उसकी स्त्री उठी, और एक मुर्गी लाकर पति के सामने पड़ी मेज़ पर रख दी। यह सब हज़ार आँखों से देख रहा था वह गंगू!

'डालो अण्डा! एक....दो ...!!' राक्षस गरज उठा। यह बात सुनते ही उस मुर्गी ने एक सोने का अण्डा मेज पर डाल दिया!

खूब उत्साह से वह झट-पट हिसाब लगता जा रहा था, आज्ञानुसार हिसाब में भूल किए बिना वह सुनहली-मुर्गी सोने के अन्डे देती चली गई। इस प्रकार अन्डों का वहाँ एक बड़ा सा ढेर लग गया! उस ढेर को देख कर खुशी के मारे ज्वाला-मुख अपनी कुर्सी पर ही सो गया। उसे सोते देख कर गंगू धीरे से उठा और राक्षस की मेज के पास पहुँचा। फिर मुर्गी को लेकर वह किले को पार कर एक क्षण में नौ-दो ग्यारह हो गया!

वहाँ गंगू की माँ बेटे की राह देखती बैठी थी। गंगू को देखते ही वह पहले की तरह भन-भनाने लगी। लेकिन बेटे के हाथ में मुर्गी और अन्डों को देख कर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। गंगू को मुर्गी का रहस्य मालूम था! सोने के अन्डे हासिल करके वह अपनी माँ के साथ सुख-पूर्वक रहने लगा।

लेकिन उस दिन जिस अप्सरा ने उसे छिपा रखा था उसकी बात गंगू नहीं भूला था। उस दुष्ट ज्वाला-मुख के अत्याचारों को कैसे बन्द किया जाय? संसार का कष्ट कैसे कम किया जाय? यह बात वह हमेशा सोचता रहा।

टाइप-राइटिङ्ग के चित्र

वी. के. मूर्त्ति

सी. शिवराम
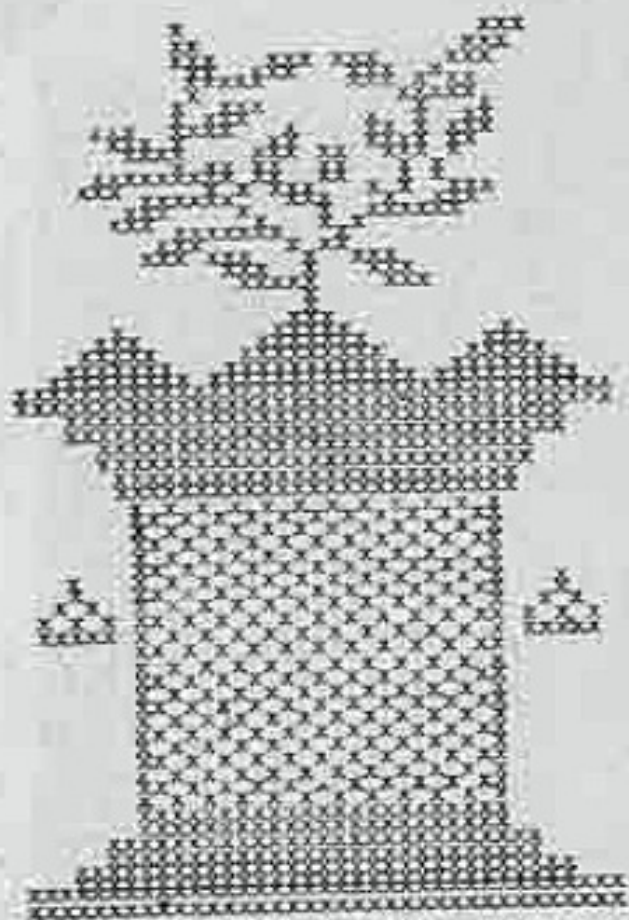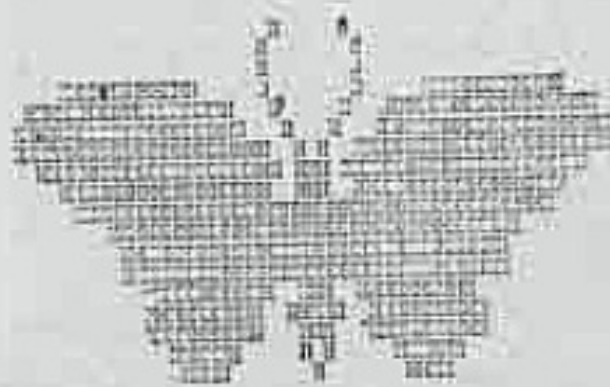
एस सुन्दरम

मंगेश नायक

फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जनवरी १९५४ :: पारितोषक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फोटो जनवरी के अङ्क में छापे जाएँगे। इनके लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर-संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर १० नवम्बर के अन्दर ही निम्न-लिखित पते पर भेजनी चाहिए।

फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास-२६

नवम्बर - प्रतियोगिता - फल

दिसम्बर के फोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १०) का पुरस्कार मिलेगा।

पहला फोटो : कहाँ हो तुम ? दूसरा फोटो : यहाँ हैं हम।

प्रेषिका :– कु. इन्दिरा रामकृष्ण राव मंगेश्वर, जलगाँव

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ प्रेषक के नाम सहित दिसम्बर के चन्दामामा में प्रकाशित होंगी।। उक्त अंक के प्रकाशित होते ही पुरस्कार की रकम भेज दी जाएगी।

चुटकुले

★

मोहन:—'मेरा मन वर्षा में नहाने को चाहता है परंतु डा. ने कपड़े उतारने को मना किया है।'
सोहन:—'तो कपड़े पहने हुए नहा लो!'
मोहन:—'कपड़े जो गीले हो जाएँगे!'
सोहन:—'छतरी लगा कर नहा लो!'

—+—

माँ:—'मुन्ना तुम्हारी बोली बहुत मीठी है।'
मुन्ना:—'हाँ, माँ! मैं शक्कर जो अधिक खाता हूँ!'

—+—

एक कसाई बकरे को बूचड़-खाने ले जा रहा था, बकरा जोर से चिल्ला रहा था। एक लड़का:—'(बकरे को देख कर) यह बकरा इतना क्यों चिल्ला रहा है?' दूसरा लड़का:—'इसे बूचड़-खाने ले जाया जा रहा है। वहाँ इसका सिर काटा जाएगा।' पहला लड़का:—'बस, यह इतनी छोटी सी बात पर रोता है! मैंने तो समझा कि शायद यह स्कूल जा रहा है!!'

—+—

माँ:—'(पुत्री से) 'यह क्या कर रही है?'
पुत्री:—'भैया को पत्र लिख रही हूँ।' माँ:—'लेकिन तुझे तो पत्र लिखना नहीं आता!'
पुत्री:—'तो भैया को भी कौनसा पढ़ना आता है!'

—+—

एक अफ़ीमची:—'(चाँद को देख कर) भाई! यह आकाश में क्या चमक रहा है?' दूसरा अफ़ीमची:—'अरे, तुम्हें पता नहीं? कल मैं यहाँ गैस का हण्डा लटका कर आया था!'

—+—

अध्यापक:—'(विद्यार्थी से) अगर सूर्य दिन को न निकले तो क्या नुकसान होगा?'
विद्यार्थी:—'बिजली का खर्च बढ़ जाएगा!'

—+—

रशीद:—'(करीम से) तुम बड़े बेवकूफ हो!'
करीम:—'अगर फिर कहा तो सर फोड़ दूँगा!'
रशीद:—'मान लो कि मैंने फिर कह दिया!'
करीम:—'तो मान लो कि मैंने तुम्हारा सर फोड़ दिया!'

—+—

एक आदमी:—'(अखबार के दफ्तर के क्लर्क से) आपकी पत्रिका में मौत की खबर देने का क्या खर्च आता है?' क्लर्क:—'३ रु. प्रति इंच।' आदमी:—'राम! राम!! वह तो पूरा पौने छः फ़ीट था!'

—+—

शारदा:—'(कमला से) मुझे रोज रात में स्वप्न आता है कि मेरे पाँव में काँटा चुभ गया है!'
कमला:—'तो फिर जूता पहन कर सोया करो!'

—+—

प्रमोद:—'मेरे भाई का कोई बाल भी, बाँका नहीं कर सकता।' नरेन्द्र:—'तो क्या वह बहुत बलवान है?' प्रमोद:—'जी नहीं, वह गंजे हैं!'

—+—

एक पठान:—'(शरीफ से) क्या तुम्हारे पिताजी घर में हैं?' शरीफ:—'अगर आप को पिताजी से रु. लेने हैं तो वे घर में नहीं हैं! अगर आप उनके मित्र हैं तो अभी बुलाए देता हूँ!'

inted by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Ltd., Madras 26, and Published by him
Chandamama Publications, Madras 26. Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'